द्रव्यगुणशास्त्र

परिभाषा :-

" द्रव्याणां नामरूपाणि गुणकर्माणि सर्वशः । प्रयोगाश्चापि वर्ण्यन्ते यस्मिन् द्रव्यगुणं हि तत् ।। "

द्रव्यों के नाम - रूप (परिचय) , गुण - कर्म और प्रयोग का सर्वांगीण विवेचन जिस शास्त्र में हो उसे द्रव्यगुण कहते हैं।

प्रयोजन :-

चिकित्सा शास्त्र का मुख्य अङ्गभूत विषय होने के कारण द्रव्यगुणशास्त्र अत्यधिक उपयोगी और महत्त्वपूर्ण है।

(1) **" स्वस्थस्य स्वास्थ्यरक्षणम् आतुरस्य विकारप्रशमनम् । "**

अर्थात् स्वस्थ व्यक्ति के स्वास्थ्य की रक्षा करना और रोगी के विकार का प्रशमन करना।

(2) करण (साधन) रूप में द्रव्य :-

" भिषाद्रव्याण्युपस्थाता रोगी पादचतुष्टयम् । गुणवत् कारणं ज्ञेयं विकारव्युपशान्तये ॥ "

चिकित्सा में चतुष्पाद का विशेष महत्व है जिसमें वैद्य कर्ता (कार्य करने वाला) है और उसे कार्य करने के लिए साधन (करण) अर्थात् द्रव्य है , इन्हीं द्रव्यों के द्वारा चिकित्सा का सम्पादन करता है।

{ शास्त्र में चिकित्सक की धानुष्क के साथ साम्यता बतायी गयी है। जिस प्रकार धानुष्क अपने साधन (तीरों) से लक्ष्य को प्राप्त करता है। उसी प्रकार वैद्य भी करणभूत द्रव्यों से चिकित्सा करता है। }

महत्व :-

1) औषधिद्रव्यों का युक्तिपूर्वक एवं योजनापूर्वक प्रयोग हो तभी **चिकित्सा कार्य में सफलता** सम्भव है , इसीलिए द्रव्यों का पूर्ण परिचय , गुण - कर्म का ज्ञान , संयोग विविध कल्पनाओं का ज्ञान तथा प्रयोग का योग्यरूप से ज्ञान होना आवश्यक है।

2) द्रव्य साधन होने के कारण शास्त्र के समान है। अतः एक ओर इनका ज्ञानपूर्वक प्रयोग के समान जीवनदायक तथा अज्ञानपूर्वक प्रयोग या दुष्प्रयोग विष के समान प्राणहर अमृत के समान प्राण रक्षक होती हैं।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

आयुर्वेद में द्रव्यगुण के महत्त्व की परिभाषा :-

आचार्य **चरक** ने **सूत्रस्थान अध्याय 30** में परिभाषा बताई है -

" यतश्चायुष्याण्यनायुष्याणि च द्रव्यगुणकर्माणि वेदयत्यतोऽप्यायुर्वेदः । "

आचार्य चरक ने ' आयुर्वेद ' की परिभाषा यह बतलाई है कि इस शास्त्र से आयुष्य और अनायुष्य द्रव्य और उसके गुण - कर्मों का ज्ञान होने के कारण भी इसे आयुर्वेद कहते हैं।

आयुर्वेद का शाश्वतत्व भी द्रव्यों के स्वभाव की नित्यता के आधार पर सिद्ध किया गया है।

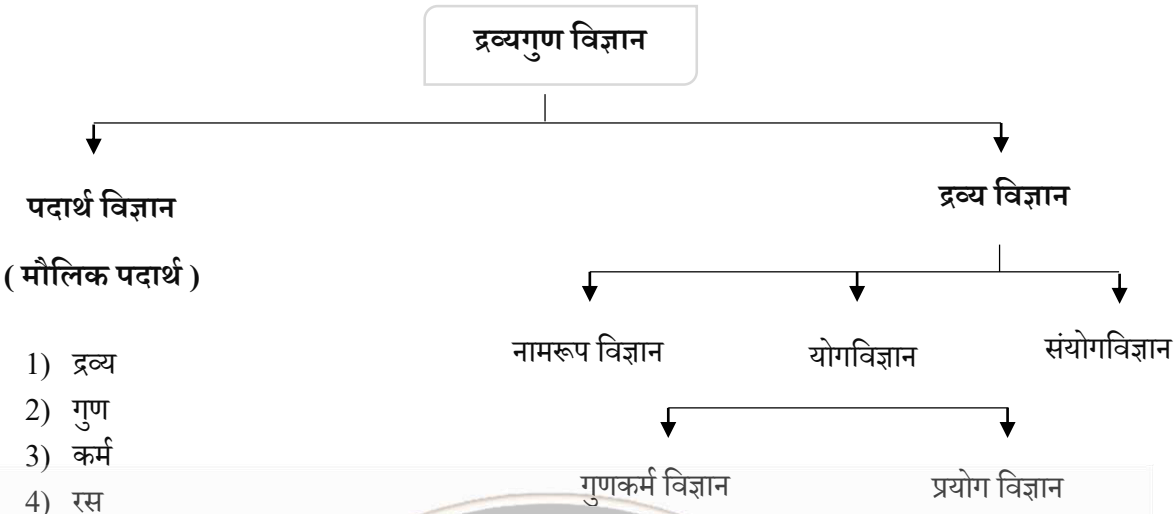

1) द्रव्यविज्ञान :-

द्रव्य वनस्पति - जांगम या खनिज सभी द्रव्यों का विस्तृत अध्ययन किया जाता है।

1) नामरूपविज्ञान / Pharmacognosy

द्रव्यों के कुल , नाम , जाति , बाह्य स्वरूप (Morphological characters) , आभ्यन्तर स्वरूप (Internal characters microscopic study) , उत्पत्तिस्थान (Habitat) आदि का विचार किया जाता है। देश , काल आदि के प्रभाव का भी ज्ञान आवश्यक है।

2) संयोगविज्ञान / Pharmacy (भैषज्य कल्पना)

विभिन्न द्रव्यों का संग्रहण एवं संरक्षण , भैषज्यनिर्माण प्रक्रिया , विविध कल्पनाओं का महत्त्व तथा द्रव्य की विलेयता के आधार पर औषधि निर्माण इन सभी विषयों का अध्ययन किया जाता है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
91 - 8319811628 , 8962265728

3) योगविज्ञान / Administration of drugs

द्रव्य की मात्रा काल तथा प्रयोगमार्ग का विचार किया जाता है। इसकी पुनः **दो शाखाएँ** हैं -

1) **गुणकर्मविज्ञान / Pharmacodynamics :-** द्रव्यों के रस , वीर्य , विपाक , गुण और प्रभाव का वर्णन एवं रसपंचक से विभिन्न शारीर अवयवों पर उनके कर्म का अध्ययन होता है।

2) **प्रयोगविज्ञान / Pharmacotherapeutics :-** गुण और कर्म के आधार पर द्रव्यों के विविध प्रयोग , मात्रा एवं अनुपान का अध्ययन किया जाता है।

2) मौलिक पदार्थ (Basic Concepts)

द्रव्यगुण के मौलिक पदार्थ , जैसे- द्रव्य , रस , गुण , वीर्य , विपाक , प्रभाव एवं कर्म का सैद्धान्तिक निरूपण किया जाता है , द्रव्यगुणशास्त्र के **सात पदार्थ** है -

1) द्रव्य (Drug)

" यत्राश्रिताः कर्मगुणाः कारणं समवायि यत् तद् द्रव्यम् । "

जिसमें गुण और कर्म समवाय सम्बन्ध से आश्रित है उसे द्रव्य कहते हैं ,**जैसे -** हरीतकी , विभीतक , आमलकी

2) गुण (Property / Quality)

" समवायी तु निश्चेष्टकारणं गुणः । "

जो द्रव्य में समवाय सम्बन्ध से रहते हैं , निश्चेष्ट एवं निष्क्रिय होते हैं उन्हें गुण कहते हैं ,**जैसे -** शीत , उष्ण , स्निग्ध , रूक्ष गुण

3) रस (Taste) -

" रस्यते आस्वाद्यते इति रसः । "

द्रव्य में जो आस्वाद होता है उसे रस कहते हैं **जैसे-** मधुर , अम्ल , लवण , कटु , तिक्त , कषाय

4) विपाक

" विशिष्टः पाकः विपाकः । "

अवस्थापाक से द्रव्यों का जो विशिष्ट पाक होता है उसे विपाक कहते हैं ।

5) वीर्य (Potency Dynamic property)

" वीर्यं तु क्रियते येन या क्रिया । "

जिसके द्वारा क्रिया होती है उसे वीर्य कहते हैं , **जैसे-** स्निग्ध- रूक्ष , शीत - उष्ण , गुरु - लघु , मन्द - तीक्ष्ण

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

6) प्रभाव (Specific action property)

" रसादिसाम्ये यत् कर्म विशिष्टं तत् प्रभावजम् । "

रस , वीर्य , विपाक समान होते हुए भी द्रव्य में जो विशेषता देखी जाती है वह प्रभाव है , **जैसे -** अर्जुन का हृद्य कर्म , दन्ती का रेचन कर्म , शंखपुष्पी का मेध्य कर्म

7) कर्म

" संयोगे च विभागे च कारणं द्रव्यमाश्रितम् । कर्तव्यस्य क्रिया कर्म कर्म नान्यदपेक्षते ॥ " (च.सू. १)

जो संयोग और विभाग में कारण हो , द्रव्य के आश्रित है , क्रियाकर्म करनेवाला है और किसी की अपेक्षा नहीं रखता उसे कर्म कहते हैं, **जैसे -** वमन , विरेचन , बृंहण एवं लंघन कर्म ।

द्रव्य निरूपण

द्रव्य शब्द की व्युत्पत्ति -

' द्रु ' गतौ धातु से यत् प्रत्यय करने पर द्रव्य शब्द बनता है

द्रव्य परिभाषा -

" द्रवति गच्छति परिणाममिति द्रव्यम् । "

अर्थात् वह पदार्थ जो परिणाम को प्राप्त होता है द्रव्य कहलाता है ।

जैन दर्शन के अनुसार भी 'दु' धातु से द्रव्य शब्द की निष्पत्ति होती है, जिसका अर्थ होता है- द्रवित होना या प्रवाहित होना ।

इस संसार की गति ऐसी है कि सभी पदार्थ उत्पन्न होते हैं, कुछ समय तक टिकते हैं, फिर नष्ट हो जाते हैं। पदार्थों के उत्पन्न और नष्ट होने की यह प्रक्रिया सतत अपनी गति से प्रवाहित होती रहती है, चलती रहती है ।

द्रव्य का लक्षण -

" यत्राश्रिता: कर्मगुणा: कारणं समवाय यत् तद् द्रव्यम् । " (च० सू०)

" क्रियागुणवत् समवायिकारणमिति द्रव्यलक्षणम् । " (वै० सू०)

" द्रव्यलक्षणं तु क्रियागुणवत् समवायिकारणमिति । " (सु० सू०)

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

अर्थात् द्रव्य वह नित्य भाव पदार्थ है क्योंकि उसकी सत्ता (Existence) है, अर्थात् उसे जाना जा सकता है तथा उसे नाम दिया जा सकता है , जो क्रिया और गुण का आधार तथा अन्यान्य कार्यद्रव्यों का समवायिकारण होता है। इस परिभाषा के अनुसार द्रव्य की निम्न विशेषताएँ प्रकट होती हैं -

तीन लक्षण -

(1) गुण तथा कर्मों का आधारभूत -

- द्रव्य क्रिया और गुण का आधार है , द्रव्य स्वयं तो अपरिवर्तित रहता है, उसमें कोई परिवर्तन नहीं होता; लेकिन उसके आश्रित क्रिया और गुण परिवर्तित होते रहते हैं।
- द्रव्य के बिना क्रिया और गुण का कोई अस्तित्व नहीं है। जब भी कोई 'क्रिया' होगी या 'गुण' होगा तो वह सर्वदा द्रव्य में ही पाई जाएगी , द्रव्य के आश्रित होगा।

यथा उष्णता , पाचकता आदि गुण राई - मरिच आदि द्रव्यों में ही रहते हैं , उनकी पृथक् सत्ता नहीं हैं।

(2) कारण -

- जो स्वसमान कार्य द्रव्य (नये द्रव्य उत्पन्न करने का) तथा कर्म कारणभूत हो।

यथा मांस खाने से शरीर में समगुण मांस की उत्पत्ति होती है

(3) समवायीकारण -

- जो समवाय सम्बन्ध से कार्य का घटक होता है तथा नित्य सम्बन्ध से द्रव्यों में रहता है।

यथा मरिच द्रव्य में कटुरस , कविपाक , उष्णवीर्य और दीपन- पाचन प्रमाथी कर्म समवाय (नित्य) सम्बन्ध से रहते हैं।

Ayurvedic Formulation

द्रव्य का औषधत्व

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

संसार के सभी द्रव्य पाञ्चभौतिक हैं और शरीर भी पाञ्चभौतिक है

शारीरिक दोष - धातु - मलों में वैषम्य होने पर सभी द्रव्यों का प्रयोग औषध रूप में हो सकता है , किन्तु कोई भी द्रव्य औषध में प्रयोग करते समय युक्तिपूर्वक (स्वरसादि कल्पना की मात्रा , काल , संयोग आदि का विचार कर करना चाहिए।

उदाहरण -

मल - मूत्रादि , तृण , वालुका जैसे निकृष्ट द्रव्य से लेकर स्वर्ण रजत तथा हीरक माणिक्य जैसे मूल्यवान द्रव्यों का प्रयोग चिकित्सा में होता है।

- अहिफेन विषद्रव्य है, इसमे अदरक रस की भावना देकर शुद्ध करके योग्य पात्रा में प्रयोग करने से ग्राही, शूलघ्न एवं निद्राजनन कार्य होता है।
- तृण जैसे तुच्छ द्रव्यों का तृणपंचमूल रूप में मूत्रकृच्छ्र तथा मूत्ररोग में प्रयोग करते हैं।
- रत्नादि मूल्यवान द्रव्यों का ग्रहबाधाशमनार्थ प्रयोग किया जाता है।

इस प्रकार जगत् में कोई भी ऐसा द्रव्य नहीं है जो वमन, विरेचन, लंघन, बृंहणादि औषधि चिकित्सा के लिए विविध कल्प- जैसे चूर्ण, क्वाथ, आसवारिष्ट इत्यादि विविध कल्पना के माध्यम से प्रयोग नहीं किया जा सकता।

सभी द्रव्यों का युक्तिपूर्वक प्रयोग करके औषधिकर्मार्थ प्रयुक्त कर सकते हैं।

द्रव्य का प्राधान्यत्व

Trick – व्यवस्था को नित्य हि पंचेन्द्रिय के स्वजात्य आश्रय से आरंभ करो जिससे शास्त्र प्रमाण के क्रमापेक्षित एक देश साध्य होगा।

1) **व्यवस्थितत्वात् -** द्रव्य रस-गुणादि की अपेक्षा व्यवस्थित (स्थिर या अपरिवर्तनशील) होने से प्रधान हैं। क्योंकि द्रव्य व्यवस्थित होते हैं, रस-गुण-वीर्यादि स्थिर नहीं होते हैं।

- **जैसे**- कच्चे फल में जो-जो अम्लादि रस होते हैं वे पक्व में नहीं रहते हैं, क्योंकि की जगह मधुरादि रस बन जाते हैं।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes

2) **नित्यत्वात् -** द्रव्य की प्रधानता-सिद्धि में दूसरा हेतु द्रव्यों के नित्य होने का देते हैं। द्रव्य निश्चित ही नित्य है किन्तु गुण आदि उसमें अनित्य होते हैं। काल , वात , जल आदि कारणों से रस आदि गुण नष्ट हो जाते है।

3) **स्वजात्यवस्थानात् -** द्रव्य अपनी पार्थिवादि जाति में स्थिर रहने से प्रधान हैं। जैसे कि पार्थिवादि द्रव्य अन्य जलादि जाति में परिवर्तित नहीं होते हैं किन्तु रसादि मे परिवर्तन होने पर अपनी जाती का परित्याग कर देते है।

4) **पञ्चेन्द्रियग्रहणात् -** पाँचों ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा ग्रहण किये जाने से द्रव्य प्रधान है।

- **जैसे -** द्रव्यों को पाँचों इन्द्रियों से जान सकते हैं किन्तु रस-गन्धादि गुण एक-एक इन्द्रियों से ही जाने जाते है।

5) **आश्रयत्वात् -** आश्रय (आहार) होने से द्रव्य प्रधान है, क्योंकि रस-गन्ध आदि गुण द्रव्य का ही आश्रय करते रहते हैं।

6) **आरम्भसामर्थ्यात् -** 'कुट्टन, आहरण तथा योग का आरम्भ आदि द्रव्य से ही होता है अत: वही प्रधान है।

- **जैसे -** विदारिगन्धादि गण के द्रव्य को लेकर कूट कर पकाये। इस प्रकार का रसगन्धादि में कार्य नहीं किया जाता है।

7) **शास्त्रप्रामाण्यात् -** शास्त्र के प्रमाण से भी द्रव्य ही प्रधान है। जैसे शास्त्र में किसी भी योग के वर्णन में द्रव्य ही प्रधान माने गये हैं।

- **जैसे** - मातुलुङ्गदि योग' में मातुलुङ्ग

8) **क्रमापेक्षितत्वात् -** द्रव्यों के क्रम (स्थित्यन्तर) के अनुरूप ही रस-गन्धादि गुणों की उत्पत्ति का क्रम अपेक्षित होने से द्रव्य ही प्रधान है।

- **जैसे -** तरुण द्रव्य में रस-गन्धादि भी तरुण (अपक्व) रहते हैं और सम्पूर्ण (परिपक्व) द्रव्य में रस-गन्धादि भी पूर्ण हो जाते हैं अनुसार बदलते।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

9) **एकदेशसाध्यत्वात् -** द्रव्यों के एकदेश से भी व्याधियाँ ठीक हो जाती हैं।

- **जैसे**- महावृक्ष (थूहर) के दुग्ध से अनेक गुल्म, शूल, आध्मान, यकृवृद्धि आदि रोग ठीक हो जाते हैं।

उपरोक्त युक्तियों से यही सिद्ध होता है कि द्रव्य सभी पदार्थों में प्रधान एवं श्रेष्ठ है।

द्रव्यप्राधान्य प्रकरण के उपसंहार में भी -

" पाको नास्ति विना वीर्याद् वीर्यं नास्ति विना रसात् ।

रसो नास्ति विना द्रव्याद् द्रव्यं श्रेष्ठतमः स्मृतम्।। "

आचार्य सुश्रुत कहते हैं - वीर्य के बिना विपाक नहीं, रस के बिना वीर्य नहीं और द्रव्य के बिना रस नहीं है

द्रव्यों का वर्गीकरण

कारण द्रव्य और कार्य द्रव्य भेद से द्रव्य दो प्रकार के होते हैं

कारणद्रव्य -

" खादीन्यात्मा मनः कालो दिशश्च द्रव्यसङ्ग्रहः । "

अर्थात् आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी, आत्मा, मन, काल और दिशा ये 9 द्रव हैं।

कार्यद्रव्य -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

अन्तश्चेतन (औद्भिद) -

1) **वनस्पति -** जिनमें केवल फल दृष्टिगोचर हो उन्हें वनस्पति कहते हैं। अर्थात् जिसमें फूल विकसित न हो किन्तु फल दिखलायी पड़े उसे वनस्पति कहते हैं।

   - **यथा** - गूलर, वट

2) **वानष्पत्य -** जिनमें फल और पुष्प दोनों दृष्टिगोचर हों उसे वानस्पत्य कहते हैं।

   - **यथा** - आम, जामुन, महुआआदि

3) **ओषधि** - जिनका फल पक जाने पर अन्त हो जाय उसे ओषधि कहते हैं।

   - **यथा** - गोधूम, यव, दूर्वा आदि

4) **वीरुध** - जो लता के रूप में फैले हों उन्हें वीरुध कहते हैं।

   - **यथा** - प्रसारिणी, गुडूची, कुश आदि

बहिरन्तश्चेतन (जाङ्गम) -

1) **जरायुज -** जो गर्भावस्था में जरायु से आवृत रहते हैंअथवा जो गर्भ से जन्म लेते हैं उन्हें जरायुज कहते हैं।

   - **यथा** - मनुष्य, पशु आदि

2) **अण्डज-** जो विशेष काल तक अण्डे के रूप में रहते हैं और जो अण्डे से जन्म लेते हैं उन्हें अण्डज कहते हैं।

   - **यथा-** पक्षी, सर्प, पतंग

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes +91 8319811628 , 8962265728

3) **स्वेदज -** जो पृथ्वी की ऊष्मा, वाष्प या प्राणियों के स्वेद से उत्पन्न होते हैं उन्हें स्वेदज कहते हैं।

   - **जैसे** - कृमि, कीट, पिपीलिका

4) **उद्भिज -** जो पृथ्वी के अन्दर कुछ काल तक रहते हैं और पुन: पृथ्वी को फाडकर बाहर निकलते हैं।

   - **यथा -** मण्डूक, वीरबहूटी आदि

2) योनिभेद से - 3

1) जांगम
2) औदभिद
3) पार्थिव

3) प्रभाव भेद से - 3

1) दोषप्रशमन
2) धातुप्रदूषण
3) स्वस्थहितकर

4) प्रयोग भेद से - 2

1) आहार द्रव्य - रसप्रधान द्रव्य
2) औषध द्रव्य - वीर्यप्रधान द्रव्य

5) औषधद्रव्य वीर्य भेद से - 3

1) तीक्ष्ण वीर्य
2) मध्य वीर्य
3) मृदु वीर्य

द्रव्यों का कर्मात्मक वर्गीकरण -

- **चरकानुसार** - 50 महाकषाय
- **सुश्रुत अनुसार** - द्रव्यों के कुल 37वर्ग बताएं

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

द्रव्यों का रचनात्मक वर्गीकरण -

चरकानुसार - आहार द्रव्यों के कुल बारह वर्ग बताये हैं -

1) शूकधान्य वर्ग ,
2) शमीधान्य वर्ग ,
3) मांस वर्ग ,
4) शाक वर्ग ,
5) फल वर्ग ,
6) हरित वर्ग ,
7) मद्य वर्ग ,
8) अम्बु वर्ग ,
9) गोरस वर्ग ,
10) इक्षु वर्ग ,
11) कृतान्न वर्ग एवं
12) आहारयोगि वर्ग

सुश्रुत अनुसार - 2 महावर्ग

आहार द्रव्यों को दो वर्गों में विभाजित किया है।

1) द्रव वर्ग
2) अन्न वर्ग

द्रव द्रव्यों को पुनः 10 वर्गों और अन्न द्रव्य को १३ वर्गों में विभाजित किया गया है।

द्रव द्रव्य -

1) जलवर्ग ,
2) क्षीरवर्ग ,
3) दधिवर्ग
4) तक्रवर्ग ,
5) धृतवर्ग ,
6) तैलवर्ग ,
7) मधुवर्ग ,
8) इक्षुवर्ग ,
9) मद्यवर्ग
10) मूत्रवर्ग

अन्न द्रव्य -

1) शालिवर्ग ,
2) कुधान्यवर्ग ,
3) वैदलवर्ग ,
4) मांसवर्ग ,
5) फलवर्ग ,
6) शाकवर्ग ,
7) पुष्पवर्ग ,
8) कन्दवर्ग ,
9) लवणवर्ग ,
10) क्षारवर्ग ,
11) धातुवर्ग ,
12) रत्नवर्ग एवं
13) कृतान्नवर्गः

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

द्रव्य - नामकरण

राजनिघण्टु के अनुसार -

✓ द्रव्यों के पर्याय नाम **सात प्रकार** के आधार से बताये हैं -

1) रूढित
2) स्वभावत
3) देशोक्ति
4) लांछन
5) उपमा
6) वीर्यानुसार
7) इतराह्वया

1) रूढित (Specific term) -

➢ यह सभी पर्याय नाम (द्रव्यों के नाम) लोकनाम के आधार पर रूढि होकर प्रयुक्त होते हैं। इनमें से सभी के नाम संस्कृत प्रत्यय के अनुसार योग्य रूप से नहीं बनता फिर भी वह नाम प्रसिद्ध है।

✓ आटरुषक - वासा
✓ राजवृक्ष - आरग्वध, नृपद्रुम
✓ टुण्टुक - श्योनाक

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

2) प्रभावत: (Natural power) -

➢ द्रव्य के प्रमुख – विशिष्ट कर्म के आधार से नामकरण किया गया है -

✓ कृमिघ्न - विडंग
✓ कुष्ठघ्न – बाकुची

3) देशोक्ति (Place of origin) -

- जिस देश में द्रव्य उत्पन्न होते हैं उस - आधार पर द्रव्यों का नामकरण किया गया है |
  - ✓ मागधी - वैदेही- पिप्पली
  - ✓ रामठ - हिंगु
  - ✓ नेपाली - मनः शिला

(4) लांछन के आधार से (Special character) -

- द्रव्यों के अन्तर्गत विशेष लक्षण के आधार पर द्रव्यों का नामकरण किया है
  - ✓ चित्रतण्डुल - विडंग
  - ✓ राजीफल - चित्रपर्णी

5) उपमा (Simile) -

- प्रयोज्य अंग का किसी ओर के साथ साम्यता होने से उपमा का प्रयोग नामकरणार्थ किया गया है -
  - ✓ राजवृक्ष - आरग्वध
  - ✓ कृतमाल - आरग्वध
  - ✓ शृंगबेर - आर्द्रक

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

6) वीर्यानुसार -

- रस, वीर्य, कर्म के आधार से द्रव्यों के नाम रखे गये हैं।
  - ✓ भल्लातक - अग्निक
  - ✓ कासमर्द - पुत्रजीवक
  - ✓ मादक - भंगा

7) इतराह्वया -

- ✓ काकाह्वय - काकमाची
- ✓ देवाह्वय- देवदारु

प्रशस्त भेषज (Ideal Drug)

परिभाषा -

- ➢ जो औषध व्याधिहरण करके रोग को दूर करता है और आरोग्य का रक्षण करता है वह श्रेष्ठ (उत्तम) औषध है

गुण -

" बहुता तत्र योग्यत्वमनेकविधकल्पना। सम्पच्चेति चतुष्कोऽयं द्रव्याणां गुण उच्यते ।। " (च.सू. ९)

1) बहुता -

- ❖ औषधिद्रव्य का प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होना। अल्प परिमाण में औषधियों का मिलना भी एक दोष है। वाग्भट ने बहुलता का अर्थ 'बहुगुणवाला, बहुत रोगों को दूर करने में जो समर्थ होता है।

2) योग्यत्व -

- ❖ रोग और रोगी के बलाबल - रोग और रोगी के बलाबल के विचार से द्रव्य में प्रयोग की योग्यता होनी चाहिए

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

3) अनेकविध कल्पना -

- ❖ जिस द्रव्य की स्वरस, कल्क, फाण्ट आदि कल्पनाएँ निर्माण हो सकती हों और जिससे रोगी की रुचि एवं विकार की अवस्था के अनुसार प्रयोग कर सकते हैं, वह प्रशस्त औषध है।

4) सम्पत् -

- ❖ जो द्रव्य अपने गुण (रस-वीर्य-विपाकादि) एवं कर्म (दीपनादि से पूर्ण रूप से सम्पन्न होता है वह श्रेष्ठ है।

द्रव्यों का शोधन

शोधन का अर्थ है - शुद्ध करना , यह एक संस्कार का प्रकार है।

" शोधनं कर्म विज्ञेयं द्रव्यदोषनिवारणम्। "

द्रव्यगत अशुद्धियों के निवारणार्थ जो कर्म किया जाता है वह शोधन है।

द्रव्यों की अशुद्धियाँ - द्रव्यों में प्रमुख **तीन प्रकार** की अशुद्धियाँ होती हैं -

1) **भौतिक अशुद्धि -**

- जब औषधिद्रव्यों का संग्रह किया जाता है तब उसमें मिट्टी, कचरा आदि का संपर्क होने की संभावना रहती है।
- बाजार में उपलब्ध औषधियाँ सुरक्षित स्थानों पर संग्रह करके न रखने से वह दूषित हो जाती हैं।
- उदाहरण - हिंगु में लकड़ी के टुकड़े, लवंग में तैल निकाली हुई लवंग।
- इस प्रकार की अशुद्धियों को भौतिक अशुद्धि कहते हैं। इसे मलदोष भी कहते हैं।

2) **रासायनिक अशुद्धियाँ -**

- विशेषतः खनिज - पार्थिव द्रव्य में रासायनिक अशुद्धियाँ होती हैं। खनिज द्रव्यों को खानों में निकालते समय अनेक प्रकार की इतर धातु और खनिज की मिलावट इन द्रव्यों में होने की सम्भावना होती है। इसे वह्निदोष भी कहते हैं।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

3) **सहज दोष -**

- कुछ द्रव्य अपने स्वाभाविक रूप में ही सेवन के लिए हानिकर होते हैं। जैसे - विष।
- इन द्रव्यों को अशुद्ध रूप में सेवन करने से शरीर पर अनिष्ट परिणाम होते हैं, अतः इनका शोधन आवश्यक है।
- इसे विषदोष भी कहते हैं।

शोधन का प्रयोजन -

- शोधन संस्कार से भौतिक, रासायनिक एवं सहज तीनों प्रकार की अशुद्धियाँ दूर हो सकती हैं।
- द्रव्य स्थित हानिकारक व अनिष्ट गुणों को कम करते हैं या पूर्ण रूप से दूर होते हैं।
- शोधन के पश्चात् विषद्रव्य भी औषधि के रूप में प्रयुक्त होते हैं।
- मूलरूप में द्रव्य संग्रह करते समय जो अशुद्धियाँ होती हैं, इनका शोधन से निवारण करने के बाद द्रव्य प्रयोगयोग्य बनता है। अन्यथा लाभ के बदले हानि ही होती है।
- शोधन द्रव्य में स्थित कार्यकारी शक्ति को सुरक्षित रखते हुए हानिकर प्रभाव को कम करके, व्याधि प्रतीकार करने में सक्षम बनाता है।

शोधन की सामान्य विधियाँ (General methods of purification)

द्रव्यों के शोधन के लिए सामान्यत: निम्नाङ्कित विधियाँ प्रयुक्त होती हैं -

1) प्रक्षालन (Washing) -

➢ जल के द्वारा प्रक्षालन करने से द्रव्य की मिट्टी, बालू आदि भौतिक अशुद्धियाँ दूर हो जाती हैं।

2) चालन (Sifting) -

➢ चलनी के द्वारा मिट्टी आदि के कण द्रव्य से पृथक् कर लिए जाते हैं।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

3) विलायन (Elutriation) -

➢ द्रव्य को चूर्ण कर जल में घोल देते हैं। अविलेय स्थूल कण नीचे बैठ जाते हैं और सूक्ष्म विलेय द्रव्य को जल के साथ पृथक् कर लेते हैं।

4) क्षरण (Lixiviation) -

➢ इसमें विलेय द्रव्य को जल के साथ अविलेय द्रव्य से पृथक् कर अन्य पात्र में गरम कर सुखा लेते हैं।

5) परिस्त्रवण (Percolation) -

- इसमें विलेय द्रव्यों को निस्यन्दन (Filtration) के द्वारा अविलेय द्रव्यों से पृथक् करते हैं।

6) सुराविलयन (Maceration) -

- सुरा में विलेय द्रव्यों को सुरासार में मिला कर रख देते हैं विलेय द्रव्य सुरासार में घुल जाता है और अविलेय द्रव्य पात्र के तल में 'जगल' (Marc) के रूप में बैठ जाता है।

7) पृथक्करण (Dialysis) -

- इसमें विशद (Crystalloids) और पिच्छिल (Colloids) द्रव्यों को जान्तव कला के द्वारा पृथक् कर दिया जाता है।

8) निर्मलीकरण (Despumation) -

- इससे सेन्द्रिय द्रव पदार्थ को उबाला जाता है और उसमें जो झाग ऊपर आते हैं उनको हटाते जाते हैं। इससे उसकी अशुद्धियाँ दूर हो जाती हैं।
- पानक आदि के निर्माण में यह विधि उपयुक्त होती है।

Ayurvedic Formulation

9) विवर्णीकरण (Decoloration) -

- द्रव्यों का सत्त्व निकालते समय उनके अन्य रञ्जक द्रव्य आदि सहचारी पदार्थों को पृथक् करना पड़ता है। सर्वप्रथम इसकेविलयन को उपशोषण (कोयला आदि) द्रव्यों के चूर्ण के सम्पर्क में रखा जाता है और बाद में फिर निस्यन्दन किया जाता है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

10) स्वेदन (Boiling) -

- किसी द्रव पदार्थ (ओषधि-स्वरस, गोमूत्र आदि) में को डुबो कर कुछ देर तक उबाला जाता है, इसे 'स्वेदन' कहते हैं। इससे भौतिक, रासायनिक एवं सहज ये तीनों दोष दूर होते हैं।
- द्रव्यों के शोधन में यह विधि बहुशः प्रयुक्त होती है।

11) मर्दन (Rubbing) -

- द्रव्य को अकेले या कोई द्रव पदार्थ मिलाकर घोंटते इसे 'मर्दन' कहते हैं।
- उपयोग - रासायनिक और सहज दोष दूर होते

12) निर्वापण (Dipping) -

- द्रव्य को आग में गरम कर किसी द्रव पदार्थ में बुझाते हैं। इससे सहसा भौतिक एवं रासायनिक परिवर्तन होने से द्रव्य के अनेक भौतिक एवं रासायनिक मल पृथक् हो जाते हैं।
- उपयोग - धातुओं के शोधन में काम आती है।

13) पातन (Sublimation) -

- उड़नशील द्रव्यों को पातन के द्वारा अन्य द्रव्यों पृथक् करते हैं।
- उपयोग - पारद, कर्पूर, गन्धक आदि उड़नशील द्रव्यों शोधन में प्रयुक्त होती है।

विशिष्ट द्रव्यों का शोधन

Ayurvedic Formulation

1) वत्सनाभ -

- वत्सनाभ के छोटे-छोटे टुकड़े करके किसी पात्र में गोमूत्र भरकर डूबोकर धूप में तीन दिन रखते हैं। प्रतिदिन गोमूत्र बदलना चाहिए। इस प्रकार तीन दिन रखने के बाद त्वचा निकालकर धूप में सुखा लें। इससे विष प्रभाव कम होता है।
- तीक्ष्णता दूर करने के लिए गोदुग्ध या बकरी के दूध में तीन घण्टे तक स्वेदन करना चाहिए।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

2) अहिफेन -

- अहिफेन - निर्यास – अफीम को प्रथम जल में घोलकर वस्त्र से छानकर मंदाग्नि से गाढ़ा कर लेना चाहिए, इससे भौतिक अशुद्धियाँ दूर होती हैं।
- आर्द्रकस्वरस की 21 भावना देकर मर्दन करने से अहिफेन शुद्ध हो जाता है।

3) गुग्गुलु -

- सर्वप्रथम बाजार में उपलब्ध गुग्गुलु में से बालू, पत्थर, के टुकड़े मिले रहते हैं, वह चुनकर अलग करना चाहिए एक प्रहर तक चार गुना गोदुग्ध में स्वेदन करना चाहिए।
- त्रिफलाक्वाथ में एक प्रहर तक दोलायंत्र में स्वेदन करने से गुग्गुलु शुद्ध होता है।

4) करवीर -

- करवीर मूल के छोटे-छोटे टुकड़े करके वस्त्र में पोट्टली बाँधकर गोदुग्ध में स्वेदन करने से करवीर शुद्ध होता है।

5) गुंजा -

- गुजा के बीजों का चूर्ण करके 1-2 प्रहर तक गोदुग्ध या काञ्जी में स्वेदन करने से गुञ्जा का शोधन होता है।

6) कुपीलु -

- कुपीलु-बीज को पोटली में रखकर गोदुग्ध में एक प्रहर तक स्वेदन करने से; अथवा -
- कुपीलु- बीज को गोमूत्र में एक प्रहर तक स्वेदन करने से कुपीलु शुद्ध होता है। उसके बाद उपर का छिलका हटाकर घृत में भून लेते हैं।

Ayurvedic Formulation

7) जयपाल -

- जयपालबीज को एक दिन पानी में भिगोकर रखते हैं, बाद में 16 भाग गोदुग्ध में स्वेदन करने से जयपाल शुद्ध होता है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

8) धत्तूर -

- धत्तूर के बीज का एक प्रहर तक गोदुग्ध में स्वेदन करके उष्ण जल से धोने से धत्तूरबीज शुद्ध होते हैं।

9) भांग -

- भांग के पत्र को पानी में उबालकर बाद में सुखाने से भांग के पत्र शुद्ध हो जाते हैं।

10) भल्लातक -

- भल्लातक के फलों के वृन्तभाग को काट कर इष्टिकाचूर्ण में सात दिन तक रखते हैं। सात दिन के बाद निकाल कर खूब रगड़कर गरम पानी से धो लेते हैं। इस प्रकार भल्लातक शुद्ध हो जाता है।
- भल्लातक का तैलांश एवं तीक्ष्ण भाग इष्टिका में शोषित हो जाता है जिससे हानिकर प्रभाव कम हो जाता है
- गोमूत्र और गोदुग्ध में चार प्रहर तक स्वेदन करने से भल्लातक की शुद्धि होती है।

11) रक्तचित्रक -

- रक्तचित्रक के मूल को चूर्णोदक में डुबा कर धूप में सुखा लेने से शुद्ध होता है।

12) स्नुहीक्षीर -

- एक भाग इमलीपत्रस्वरस और चार भाग। स्नुहीक्षीर मिलाकर धूप में सुखा लेने से स्नुहीक्षीर की शुद्धि होती है।

13) अतिविषा -

- अतिविषा मूल के छोटे टुकड़े करके गोमयरस में तीन प्रहर तक स्वेदन करना चाहिए। बाद में स्वच्छ कोष्ण जल से धोकर धूप में सुखाने से अतिविषा के तीक्ष्ण, उष्ण गुण कम होकर चिकित्सा में प्रयुक्त करते है।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

द्रव्यों के शोधन द्रव्य

1) **वत्सनाभ -** गोमूत्र मे डुबना (3 प्रहार तक) तत्पश्चात गोदुग्ध और अजादुग्ध मे स्वेदन

2) **गुग्गुलु -** गोदुग्ध मे स्वेदन (1 प्रहार तक)

3) **कूपिलु** - गोदुग्ध मे स्वेदन (1 प्रहार तक) तत्पश्चात गोघृत मे भुनना

4) **गुंजा** - गोदुग्ध एवं कांजी स्वेदन (1 प्रहार तक)

5) **जयपाल** - गोदुग्ध मे स्वेदन (1 प्रहार तक)

6) **धत्तुर** - गोदुग्ध मे स्वेदन (1 प्रहार तक)

7) **विजया / भंगा -** समभाग गोघृत मे भुनना

8) **हिंगु -** समभाग गोघृत मे भुनना

9) **अहिफेन -** आर्द्रक स्वरस 21 बार भवन देने से

10) **भल्लातक** - इष्टिका चूर्ण मे 7 दिन तक रखकर बाद मे उष्ण जल मे प्रक्षालन करना

11) **स्नुही क्षीर** - अम्लिका / चिंचा स्वरस से

12) **रक्तचित्रक -** चूर्णोदक मे डुबाकर धूप मे रखे

13) **हिंगुल -** नींबू स्वरस की 7 भावना , बाद मे जल से प्रक्षालन

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

मिश्रक गण

समान गुण-कर्म द्रव्य के गण को धन्वन्तरिनिघण्टुकार ने मिश्रक गण नाम दिया है।

औद्भिद गण -

- इसके अन्तर्गत प्रयोज्य-अङ्ग के अनुसार विभिन्न वर्ग बताये गये हैं।

1) बृहत्पंचमूल -

परिभाषा - जिन औषधिद्रव्यों के मूल चिकित्सा में प्रयुक्त किये जाते हैं और इसमें प्रयुक्त द्रव्य वृक्षस्वरूप के बड़े होते हैं, अत: उसे बृहत्पंचमूल कहते हैं।

द्रव्य - **" बिल्वाग्निमन्थटुण्टुकपाटला: काश्मर्यश्चेति महतम्। "**

बिल्व, अग्निमन्थ, श्योनाक, पाटला तथा गंभारी

गुण कर्म -

" पञ्चमूलं महातिक्तं कषायं कफवातनुत्। मधुरं श्वासकासघ्नमुष्णं लघ्वग्निदीपनम्। " (भा.प्र.)

- रस - तिक्त, मधुर
- विपाक - कटु
- गुण - लघु
- वीर्य - ऊष्ण
- दोष कर्म - कफ़वात नाशक

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

Trick

BAS PG

अन्य कर्म -

- दीपन- पाचन
- कासघ्न
- श्वासघ्न

2) लघुपंचमूल -

परिभाषा - जिन औषधिद्रव्यों के मूल चिकित्सा में प्रयुक्त किये जाते हैं, क्षुप स्वरूप की वनस्पति के मूल जो संख्या में पाँच होते हैं, अत: उसे लघुपंचमूल कहते हैं।

द्रव्य -

" शालपर्णी पृश्निपर्णी वार्ताकी कण्टकारिका। गोक्षुर:पञ्चभिश्चैतै: कनिष्ठं पञ्चमूलकम्' ।। " (भा.प्र.)

गोक्षुर (त्रिकण्टक), कण्टकारी, बृहती, शालिपर्णी (विदारीगन्धा) और पृश्निपर्णी।

गुण-कर्म -

" पञ्चमूलं लघु स्वादु बल्यं पित्तानिलापहम्। नात्युष्णं बृंहणं ग्राहि ज्वरश्वासाश्मरिप्रणुत् ।। " (भा.प्र.)

- रस - तिक्त, मधुर
- विपाक - मधुर
- गुण - लघु
- वीर्य - नात्युष्ण
- दोषकर्म - वात-पित्तशमन

Trick

शास्त्री गाय को बृहत कंटपर्णी खिला।

अन्य कर्म -

- ज्वरघ्न
- अश्मरीघ्न
- श्वास
- बृंहण
- ग्राही
- बल्य

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 8319811628 , 8962265728

3) दशमूल -

- बृहत्पंचमूल एवं लघुपंचमूल मिलकर दशमूल होता है।

द्रव्य -

" बिल्व, अग्निमन्थ, श्योनाक, गम्भारी, पाटला, शालिपर्णी, पृश्निपर्णी, कण्टकारी, बृहती और गोक्षुर "

गुण-कर्म -

" दशमूलं त्रिदोषघ्नं श्वासकासशिरोरुजः । तन्द्राशोथज्वरानाहपार्श्वपीडारुचीहरेत् ।। " (भा.प्र.)

- दोषकर्म - त्रिदोषघ्न
- **विशेषतः** वातदोषशामक
- **लघुपंचमूल** वात-पित्तशामक
- **बृहत्पंचमूल** कफ-वातशामक

रोगघ्नता -

- श्वास, कास,
- शिरोरुज,
- तन्द्रा, शोथ,
- ज्वर, आनाह,
- पार्श्वपीड़ा और अरुची नाशक

Ayurvedic Formulation

4) कण्टकपञ्चमूल -

व्याख्या -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes

- जिन कण्टकयुक्त वनस्पति द्रव्य के मूल प्रयुक्त किये जाते हैं और जो संख्या में पाँच हैं उसे कण्टकपञ्चमूल कहते हैं।

+91 - 8319811628 , 8962265728

द्रव्य -

" करमर्दत्रिकण्टकसैरेयकशतावरीगृध्रनख्यः इति कण्टकसंज्ञः । "

करमर्द, गोक्षुर, सैरेयक, शतावरी और गृध्रनखी (हिंस्रा)

गुण-कर्म -

" रक्तपित्तहरौ ह्येतौ शोफत्रयविनाशनौ । सर्वमेहहरौ चैव शुक्रदोषविनाशनौ ।। "

- रक्तपित्तहर
- त्रिदोषजन्य शोथ
- सर्वमेहहर
- शुक्रदोषविनाशन

Trick

वल्ली की सारि में गुड्डू
हरी मजे से विदा लिए।

5) वल्लीपञ्चमूल -

व्याख्या -

- जिन वल्ली (लता) स्वरूप द्रव्य के मूल प्रयुक्त होते हैं, जो संख्या में पाँच हैं उसे वल्लीपञ्चमूल कहते हैं।

द्रव्य -

" विदारीसारिवारजनीगुडूच्योऽजशृङ्गी चेति वल्लीसंज्ञकः । "

विदारीकन्द, सारिवा, हरिद्रा, गुडूची और अजशृंगी

गुण - कर्म -

" रक्तपित्तहरौ ह्येतौ शोफत्रयविनाशनौ । सर्वमेहहरौ चैव शुक्रदोषविनाशिनौ ।। "

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

6) तृणपंचमूल -

Trick

KAND

KA - काश , कुश , काण्डेक्षु

N - नाल

D - दर्भ

व्याख्या -

- तृण प्रकार की पाँच वनस्पतियों के मूलों को एकत्रित करना तृणपंचमूल हैं।

द्रव्य -

" कुशकाशनलदर्भकाण्डेक्षुका इति तृणसंज्ञकः । "

कुश, काश नल, दर्भ और इक्षु

गुण - कर्म -

" मूत्रदोषविकारं च रक्तपित्तं तथैव च । "

- मूत्रदोषविकार
- रक्तपित्त में

Trick

BP me एरंडपर्णी नही ।

7) मध्यमपञ्चमूल -

द्रव्य -

" बलापुनर्नवैरण्डशूर्पपर्णीद्वयेन तु । "

बला, पुनर्नवा, एरण्ड, माषपर्णी और मुद्गपर्णी

गुण - कर्म -

" मध्यमं कफवातघ्नं नातिपित्तकरं सरम् । "

- कफ-वातशामक
- किञ्चित् पित्तकर
- सरगुण
- उत्तम वातानुलोमन

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

Trick

अभि जीतू शत बार ऋषि के पास गए।

8) जीवनपञ्चमूल -

व्याख्या -

- जिन पाँच औषधिद्रव्य के मूल जीवन कर्म अर्थात् आयुष्य बढ़ाने के लिए प्रयुक्त किये जाते हैं उसे जीवनपञ्चमूल कहते हैं ।

द्रव्य -

" अभीरुवीराजीवन्तीजीवकर्षभकै: स्मृतम् । "

अभीरु (शतावरी), वीरा (काकोली), जीवन्ती, जीवक और ऋषभक ।

गुण - कर्म -

" जीवनाख्यं च चक्षुष्यं वृष्यं पित्तानिलापहम् ॥ "

- वात-पित्तशामक।
- सप्तधातुवर्धन
- बल्य, चक्षुष्य, वृष्य

9) पंचपञ्चमूल -

- पाँच गणों के द्रव्यों को एकत्र करने से पंच पंचमूल होता है।

सुश्रुतमतानुसार -

बृहत्पंचमूल, लघुपंचमूल कण्टकपंचमूल, वल्लीपंचमूल, तृणपंचमूल ।

वाग्भटानुसार -

बृहत्पंचमूल, लघुपंचमूल, तृणपंचमूल, जीवनपंचमूल, मध्यमपंचमूल ।

10) पञ्चवल्कल -

व्याख्या -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

- जिन बड़े पाँच वृक्षों की त्वक प्रयुक्त करते हैं, उसे कल कहते। इसे ही पञ्चक्षीरीवृक्ष कहते हैं।

द्रव्य -

" न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थपारीषप्लक्षपादपा:। पञ्चैते क्षीरिणो वृक्षास्तेषां त्वक् पञ्चवल्कलम् ॥ "

न्यग्रोध (वट), उदुम्बर, अश्वत्थ (पिप्पल), प्लक्ष और पारीष

- राजनिघण्टुकार पारीष के स्थान पर वेतस को मानते हैं।

Trick

पारस अश्व को वट पीपल
खिला अंबर के पास लाया

कर्म -

- कषाय रसात्मक होने से स्तम्भन कर्मार्थ प्रयोग |
- पुरीष, रक्तस्तम्भन, योनिगत श्वेतस्राव तथा रक्तस्राव में बाह्य एवं आभ्यन्तर प्रयोगार्थ।

11) पञ्चपल्लव -

व्याख्या -

- जिन द्रव्यों के नवीन पत्र-पल्लव का प्रयोग करते हैं और जो संख्या में पाँच हैं उसे पंचपल्लव कहते हैं।

द्रव्य -

" आम्रजम्बूकपित्था नां बीजपूरकबिल्वयो: । "

आम्र (आम), जम्बू (जामुन), कपित्थ ( ), बीजपूरक (निम्बु) और बिल्व

कर्म -

- गन्धकर्मार्थ प्रयोग
- छर्दिघ्न।

Trick

पल्लवी आम जामुन बिल्व
को नींबू बताती हैं।

12) त्रिफला -

व्याख्या -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

- जिनमें तीन फलों का प्रयोग किया जाता है वह त्रिफला है।

त्रिफला से निम्नोक्त संज्ञा का ग्रहण होता है।

1) महती त्रिफला
2) स्वल्प त्रिफला
3) मधुर त्रिफला
4) सुगन्धी त्रिफला

महतीत्रिफला -

पर्याय - फलत्रिक, वरा, महती त्रिफला, कषाय त्रिफला।

" हरीतक्यामलकबिभीतकानि त्रिफला। "

- ✓ सम प्रमाण में तीन द्रव्यों के फलों को एकत्रित करने से त्रिफला बनती हैं।
- ✓ एक हरीतकी
- ✓ दो विभीतक
- ✓ चार आमलकी फलों को।
- ✓ एकत्र मिलाने से त्रिफला कहते हैं

गुण-कर्म -

" त्रिफला कफपित्तघ्नी मेहकुष्ठहरा सरा। चक्षुष्या दीपनी रुच्या विषमज्वरनाशिनी ।। "

- ➢ नेत्रविकार
- ➢ प्रमेहघ्न
- ➢ स्थौल्यहर
- ➢ रक्तविकार
- ➢ विषमज्वर
- ➢ दीपन
- ➢ धातुकर्म - रसायन
- ➢ मलकर्म - विरेचन

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
91 - 8319811628 , 8962265728

- ❖ **आमलकी विशेषत**: पित्तशामक
- ❖ **हरीतकी विशेषत**: वातशामक
- ❖ **बिभीतक विशेषत**: कफशामक

स्वल्पत्रिफला -

द्रव्य - **गंभारी, खर्जूर और परूषक**

कर्म - पित्तशामक , बल्य बृंहण

मधुरत्रिफला -

द्रव्य - **द्राक्षा, गंभारी और खर्जूर**

कर्म - पित्तशामक

सुगन्धित्रिफला (सुरभित्रिफला) -

द्रव्य - **जातीफल, लवंग और सुपारी**

कर्म - मुखदुर्गन्धनाशन

13) **त्रिकटु -**

पर्याय - कटुत्रिक ,व्योष

व्याख्या -

- जिसमें तीन कटु रसवाले द्रव्य होते हैं उस समूह को त्रिकटु कहते हैं

द्रव्य -

विश्वा (शुण्ठी), उपकुल्या (पिप्पली) और मरिच

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

गुण - कर्म -

" त्र्यूषणं दीपनं हन्ति श्वासकासत्वगामयान् । गुल्ममेहकफस्थौल्यमेदः श्लीपदपीनसान् ।। "

- दीपन
- पाचन
- श्वासकासहर

- गुल्म- श्लीपदहर
- स्थौल्यहर
- श्लीपद, पीनस

14) चतुरूषण -

व्याख्या -

- चार उष्णवीर्यात्मक एवं कटुरसात्मक द्रव्यों के समूह को चतुरूषण कहते हैं।

द्रव्य -

त्र्यूषण (शुण्ठी, मरिच, पिप्पली) के साथ पिप्पलीमूल

गुण - कर्म -

- पिप्पलीमूल त्र्यूषण से अधिक उष्ण- तीक्ष्ण गुण-कर्म समान है।
- पाचन, लेखन, शूलघ्न।

15) पञ्चकोल -

व्याख्या -

- जिस गण में सभी द्रव्य १ कोल आधा कर्ष (5 gram) परिमाण में लिये जाते हैं।
- जो द्रव्य संख्या में पाँच होते हैं उसे पंचकोल कहते हैं।
- सभी द्रव्य कटु रस एवं उष्णवीर्य होने से उन्हें पंचकोल या पंचोषण भी कहते हैं।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

द्रव्य -

" पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकनागरैः। पञ्चभिः कोलमात्रं यत् पञ्चकोलं तदुच्यते ।। "

पिप्पली, पिप्पलीमूल, चव्य, चित्रक तथा नागर (शुण्ठी) ये पाँच द्रव्य एक-एक कोल मात्रा में लेना

गुण कर्म -

" तीक्ष्णोष्णं पाचनं श्रेष्ठं दीपनं कफवातनुत् । गुल्मप्लीहोदरानाहशुलघ्नं पित्तकोपनम् ।। "

- कफवातशामक
- पित्तवर्धन
- दीपन- पाचन
- उदरशूल
- गुल्म
- प्लीहा
- आनाह

16) षड्षण -

व्याख्या -

- जिनमें छहः कटुरस और उष्णवीर्य युक्त द्रव्यों का समूह होता है उसे षड्षण कहते हैं।

द्रव्य -

पंचकोल (पिप्पली, पिप्पलीमूल, चव्य, चित्रक, शुण्ठी) + मरिच

गुण - कर्म-

- पंचकोल के समान गुणकर्म

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

Note –

- **त्रिकटु -** शुण्ठी, मरिच, पिप्पली
- **चतुरूषण** - शुण्ठी, मरिच, पिप्पली, पिप्पलीमूल
- **पंचकोल -** पिप्पली, पिप्पलीमूल, चव्य, चित्रक, शुण्ठी
- **षड्षण -** पिप्पली, पिप्पलीमूल, चव्य, चित्रक, शुण्ठी, मरिच

17) त्रिमद -

व्याख्या -

- जिन तीन द्रव्यों को एकत्र करने से मद की उत्पत्ति होती है या अतिमात्रा में सेवन से मद की उत्पत्ति होती है उसे त्रिमद कहते हैं

द्रव्य -

विडंग, मुस्ता और चित्रक

दोषकर्म -

- कफ-वातशमन, पित्तप्रकोप
- दीपन - पाचन
- शूलघ्न
- कृमिघ्न
- अर्शोघ्न
- गुल्महर

18) चतुर्बीज -

व्याख्या -

- जिन चार वनस्पति द्रव्य के बीजों का प्रयोग करके एकत्र किया जाता है वह चतुबीज है।

द्रव्य -

" मेथिका चन्द्रशूर कालाजाजी यवानिका । "

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

गुण - कर्म -

" अजीर्णशूलमाध्मानं पार्श्वशूलं कटिव्यथाम् ।। "

- दोषकर्म - कफवातशामक
- अग्निमान्द्य, अजीर्ण, आध्मान, उदरशूल, कटि पार्श्वशूल, वातव्याधि

19) जीवनीय -

व्याख्या -

" जीवनमायु: तस्मै हितं जीवनीयम् "

जीवन अर्थात् आयुष्य - आयुष्य के लिए हितकर द्रव्य जीवनीय द्रव्य कहलाते है।

" जीवनं प्राणसन्धारणं तस्मै हितं जीवनीयम्। "

जीवन - प्राणधारण के लिए हितकर द्रव्य जीवनीय द्रव्य कहलाते हैं।

द्रव्य -

जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, मुद्गपर्णी, माषपर्णी, जीवन्ती और यष्टिमधु

ये दश द्रव्य जीवनीय गण में बताये हैं।

गुण - कर्म -

- रक्तपित्तहर
- भग्न,
- नेत्रविकार,
- धातुक्षय आदि में

Ayurvedic Formulation

20) अष्टवर्ग -

द्रव्य - जीवक, ऋषभक, मेदा, **महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली,** ऋद्धि और वृद्धि

गुण - कर्म -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

" वातपित्तास्रतृड्दाहज्वरमेहक्षयापहः। "

दोष कर्म - वातपित्तशमन, कफकर।

धातु - बृंहण, बल्य, शुक्रल।

कर्म -

- रक्तपित्तहर , तृषादाहशमन
- क्षयरोगहर ,जीर्णज्वरआदि में

प्रतिनिधि द्रव्य -

- अष्टवर्ग के द्रव्य प्रचुर मात्रा में उपलब्ध न होने से प्रतिनिधि द्रव्यों का प्रयोग किया जाता है।

द्रव्य	प्रतिनिधि द्रव्य
मेदा- महामेदा	शतावरी
जीवक-ऋषभक	विदारीकन्द
काकोली क्षीरकाकोली	अश्वगन्धा
ऋद्धि-वृद्धि	वाराहीकन्द

21) त्रिजात -

व्याख्या -

- जात अर्थात् सुगन्धि – तीन सुगन्धि द्रव्य के समूह को त्रिजात कहते -

द्रव्य -

त्वक् (दालचीनी), एला (इलायची) और पत्रक (तेजपत्र)

22) चातुर्जातक -

- त्रिजात में नागकेशर मिलाने से चातुर्जातक कहा जाता है।

त्रिजात चातुर्जातक के गुण-कर्म -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

“ मुखगन्धहृत् लघुपित्ताग्निकृद् वर्ण्य कफवातविषापहम्।। ”

- दोषकर्म - कफ - वातशामक
- दीपन
- मुखदौर्गन्ध्यनाशक
- विषघ्न

23) पंचतिक्त -

व्याख्या -

- जिसमें पाँच तिक्तरसात्मक द्रव्य एकत्र होते हैं उसे पंचतिक्त कहते हैं।

द्रव्य -

गुडूची, निम्बमूलत्वक्, भिषङ्नाता (वासा), निदिग्धिका (कण्टकारी) और ·पटोलपत्र

रोगघ्नता - अरुचि, अग्निमान्द्य, अजीर्ण, आमदोष, छर्दि, कुष्ठ, दुष्टव्रण तथा ज्वरदौर्बल्य।

त्रिकर्षिक - शुण्ठी, अतिविषा, मुस्ता

चातुर्भद्र - त्रिकर्षिक + गुडूची

बालचातुर्भद्र - पिपली ,अतिविषा, नागरमोथा , कर्कटश्रृंगी

अम्लपञ्चक -

व्याख्या -

- पाँच अम्लरसात्मक द्रव्यों के समूह को अम्लपंचक कहते हैं।

द्रव्य -

अम्लवेतस, जम्बीर, मातुलुंग (बीजपूरक), नारंग और निम्बुक

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

कर्म - हृद्द रोग में , उदरशूल , आनाह

महापञ्चविष -

व्याख्या -

- पाँच प्रमुख विषद्रव्य के समूह को महापञ्चविष कहते हैं।

द्रव्य -

शृंगिक, कालकूट, मुस्तक, वत्सनाभ और सक्तुक ये पाँच द्रव्य महापञ्चविष हैं।

उपविष -

व्याख्या -

- महाविष से सौम्यगुण युक्त किन्तु विषलक्षणयुक्त द्रव्य उपविष समूह के अन्तर्गत आते हैं।

" अर्कक्षीरं स्नुहीक्षीरं लाङ्गली करवीरकम् । गुञ्जाहिफेनो धत्तूरः सप्तोपविषजातयः ॥ " (रा.नि.)

अर्कक्षीर, स्नुहीक्षीर, लांगली, करवीर, गुंजा, अहिफेन तथा धत्तूर।

गुण-कर्म - ये महाविष से सौम्य होने से सद्यः प्राणहर नहीं हैं।

जांगम गण -

क्षीराष्टक -

- जिसमें आठ प्राणियों के दुग्ध को एकत्र किया जाता है उसे क्षीराष्टक कहते हैं।

1) गाय,
2) माहिष,
3) अज,
4) कारभ (ऊँटनी),
5) स्त्री,
6) आविक (मेंढी),
7) ऐभ (हथिनी)
8) एक शफ प्राणी (घोड़ी, गदही)

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

सामान्य गुण - कर्म -

" जीवनीयं श्रमहरं श्वासकासनिबर्हणम् । हन्ति शोणितपित्तं च सन्धानं विहितस्य च । "

- जीवनीय ,
- शक्तिवर्धक ,
- श्रमनाश ,
- श्वास-कासनाशक ,
- रक्तपित्तरोगनाशक तथा भग्नसंधानकर है।

मूत्राष्टक -

व्याख्या -

➢ जिसमें आठ प्राणियों के मूत्रों को एकत्र किया जाता है उसे मूत्राष्टक - कहते हैं।

1) अवि (भेड़),
2) अजा (बकरी),
3) गाय,
4) माहिष,
5) हाथी,
6) ऊँट,
7) घोड़ा
8) गधे के मूत्र

गुण - कर्म -

" शोधनं कफवातघ्नं कृमिमेदोविषापहम् ।। "

➢ अग्निदीपन,
➢ विषनाशक,
➢ कृमिघ्न

Note – पाण्डुरोग में विशेष लाभदायी है।

पित्तपञ्चक -

व्याख्या -

➢ जिन पाँच प्राणियों के पित्त का प्रयोग किया जाता है उस गण को पित्तपंचक कहते हैं।

" पित्तं पञ्चविधं मत्स्यगोअश्वनरबर्हिजम् "

मत्स्य गाय, घोडा, मनुष्य, मयूर

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

पार्थिव गण -

लवणपञ्चक -

1) सैन्धव,
2) सौवर्चल,
3) विड,
4) सामुद्र
5) गड (रोमक)

क्षारद्वय -

" क्षरणात् क्षार: । "

अर्थात् जो क्षरण करता है, वह क्षार है।

1) स्वर्जिकाक्षार
2) यवक्षार

क्षाराष्टक -

पलाश, स्नुही, अपामार्ग, चिंचा, अर्क, तिलनाल, यव , स्वर्जीक्षार

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

धन्वन्तरिनिघण्टु

परिचय -

- धन्वन्तरिनिघण्टु सर्वप्राचीन निघण्टु है।
- इस ग्रंथ के प्रारम्भ में द्रव्यावली के नाम से द्रव्यों के पर्याय शैली से जुड़ा एक भाग है, इसके पश्चात् गुण-कर्म शैली के आधार पर वर्णन किया गया है।

नामकरण -

- निघण्टु का वास्तविक नाम द्रव्यावलिसमुच्चय है।
- इस ग्रन्थ की शुरूआत धन्वन्तरि वन्दना के साथ होने के कारण इसे धन्वन्तरिनिघण्टु नाम दिया है।

ग्रन्थकर्ता -

- धन्वन्तरिनिघण्टु के रचयिता श्री **माहेन्द्रभोगिक** है।

काल निर्धारण - 10 - 13 वी शती

Ayurvedic Formulation

विषयवस्तु -

- धन्वन्तरिनिघण्टु **में सात वर्गों** में वर्गीकृत किया गया है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

1) गुडूच्यादि वर्ग -

- ✓ कुल 11 गण बताये हैं।
- ✓ ऊर्ध्वाध: दोषनिर्हरणार्थ के बाद सर्वरोगनाशक एवं क्वाथ कल्पना को प्रधानता दी गयी है।

2) शतपुष्पादि वर्ग -

- ✓ इस वर्ग में आभ्यन्तर प्रयोगार्ह सर्पिप्रयोग एवं चूर्णप्रयोग कल्पना का संग्रह है।
- ✓ योनिदोषहर और अग्निप्रसादकृत वर्ग का वर्णन मिलता है।

3) चन्दनादि वर्ग -

- ✓ इस वर्ग में गन्धगुणप्रधान और उत्तम श्रेणी के मनुष्य के लिए प्रयुक्त द्रव्य का वर्णन मिलता है, जिसमें महासुगन्धि तैल, पामादिहर तैल और नेत्राञ्जन है।

4) करवीरादि वर्ग -

- ✓ विविध रोगशान्ति हेतु क्षुपवनौषधि द्रव्य हैं। तैल, धूम, नस्य, चूर्ण, तक्र एवं कांजी कल्पानाओं का वर्णन है

5) आम्रादि वर्ग -

- ✓ फल-लता और पुष्प से आश्रित चिकित्सोपयोगी द्रव्यों का और संग्रह है।
- ✓ हृद्य फल, सुगन्धित पुष्प त्वक् प्रयोज्य अंगयुक्त वृक्षों का वर्णन किया गया है।

6) सुवर्णादि वर्ग -

- ✓ खनिज द्रव्य, खाद्यान्न वनस्पतियाँ, द्रवद्रव्य (तैल, घृत, दुग्ध, दधि, मधु, मद्य, आसव, अरिष्ट, जल का समाविष्ट है) तथा मांसद्रव्यों का वर्णन है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

7) मिश्रक वर्ग-

- ✓ स्थावर विष, जाङ्गम विष, विषविशेष तथा उपविष गण का वर्णन है।

ग्रन्थवैशिष्ट्य -

- धन्वन्तरिनिघण्टु के लेखन काल में अन्य कई निघण्टु प्रचलित थे। उनका सार लेकर यह निघण्टु लिखा गया।
- संस्कृत-प्राकृत नाम जानकर, अनेक लोगों से पूछकर और देखकर अच्छी तरह स्पर्श करके जातिगत चिह्नों से आदरपूर्वक औषधि का ज्ञान करना चाहिए। द्रव्यज्ञान किस प्रकार करना चाहिए - इस विषय में वर्णन मिलता है।
- द्रव्यों के नाम से गणों का वर्णन किया गया है। उदाहरण — आम्रादि वर्ग, सुवर्णादि वर्ग।
- चरक - सुश्रुत में गणों की गणना में एक द्रव्य कई गणों में आया है किन्तु धन्वन्तरि निघण्टु के गणपाठ में एक द्रव्य एक ही गण में आया है, दूसरे में नहीं।

राजनिघण्टु (निघण्टुओं का राजा)

नामकरण -

- राजनिघण्टु का प्रथम नाम अभिधानचूड़ामणि या द्रव्याभिधानगणसंग्रह था।

ग्रन्थकर्ता -

- श्री नरहरि पण्डित इस ग्रन्थ के लेखक हैं।

काल निर्णय - 17 वी शती

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

विषयवस्तु - **23 वर्गों** का वर्णन किया है।

1) **आनूपादि वर्ग -** देश - क्षेत्रादि का वर्णन |
2) **धरण्यादि वर्ग** - भूमि, पर्वत, अरण्य, वन-उपवन, वृक्ष के अवयवों का वर्णन |
3) **गुडूच्यादि वर्ग** - वनस्पतियों का वर्णन मिलता है।
4) **शताह्वादि वर्ग** - क्षुपजातीय बड़े द्रव्यों का वर्णन मिलता है।

5) **पर्पटादि वर्ग -** क्षुपजातीय छोटे द्रव्यों का वर्णन मिलता है

6) **पिप्पल्यादि वर्ग** - मसालों की तरह प्रयुक्त द्रव्यों का वर्णन मिलता है।

7) **मूलकादि वर्ग** - मूल, कन्द, फल, पत्रादि शाक द्रव्य।

8) **शाल्मल्यादि वर्ग** - कंटकयुक्त कुल द्रव्य।

9) **प्रभद्रादि वर्ग -** बड़े आकार के वृक्ष।

10) **करवीरादि वर्ग** - देवादि एवं जनमानस के आमोद-प्रमोदार्थ प्रयुक्त कुल पुष्पद्रव्यों का वर्णन मिलता है।

11) **आम्रादि वर्ग -** फलद्रव्य वर्णित हैं।

12) **चन्दनादि वर्ग -** सुगन्धी द्रव्यों का वर्णन है।

13) **सुवर्णादि वर्ग** - धातु, रत्न - उपरत्नादि वर्णित हैं।

14) **पानीयादि वर्ग -** नदियाँ एवं समुद्रादि जल का भूमिभेदानुसार, इक्षु, मधु एवं आसवारिष्ट का वर्णन है।

15) **क्षीरादि वर्ग** - दुग्ध, दधि, घृत, नवनीत, तक्र, गोमूत्रादि एवं तैलों का वर्णन

16) **शाल्यादि वर्ग**- धान्य, द्विदल, कोद्रवादि एवं खाद्यान्न निर्मिती का विवरण

17) **मांसादि वर्ग** - प्रतुदादि प्राणियों के मांस का वर्णन है।

18) **मनुष्यादि वर्ग** - पुरुष, स्त्री, नपुंसक, राजा, ब्राह्मणादि के नाम तथा शरीरावयवों के नाम का वर्णन है।

19) **सिंहादि वर्ग** - विविध प्राणी, सिंहादि पशु, गृध्रादि पक्षी एवं मशकादि का वर्णन है।

20) **रोगादि वर्ग** - रोग, वैद्य, औषध, रोगी, पथ्य, अन्न, भोजन, रस, विपाकादि का वर्णन है।

21) **सत्त्वादि वर्ग** - त्रिगुण, त्रिदोष, कालभेद, दिशाभेद का वर्णन है।

22) **मिश्रकादि वर्ग** - त्रिकटु, त्रिफलादि एवं संधानादि का वर्णन है।

23) **एकार्थादि वर्ग**

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

विशेषता -

- कुल २३ वर्ग में 703 वनौषधियों का वर्णन मिलता है।
- द्रव्यों के नामकरण में एक नया प्रकाश डाला है, अनेक प्रकार के नामों से द्रव्य की पहचान पर्याय से होती है। यह नामकरण 7 प्रकार से किया गया है।

- अनेक प्रान्तों के नाम एवं नवीन वर्ग का वर्णन मिलता है। धन्वन्तरिनिघण्टु के अनुसार वर्णनक्रम होते हुए भी अधिक द्रव्यों का वर्णन किया है।
- वनस्पतियों के अनेक भेदों का वर्णन मिलता है वनस्पतियों में चेतना तथा पाञ्चभौतिकता की सिद्धि
- द्रव्यगुण को अष्टांग में समाविष्ट ही नहीं किया अपितु आद्य स्थान दिया है, जिससे द्रव्यगुण के उत्कर्ष का बोध होता है।

भावप्रकाशनिघण्टु -

- भावप्रकाशनिघण्टु द्रव्यगुणविज्ञान में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ माना जाता है।
- अनेक लोकोपयोगी देशी-विदेशी द्रव्यों को एक साथ मिलाकर निघण्टु को व्यावहारिक रूप दिया।

कर्ता -

- भावप्रकाशनिघण्टु के रचयिता लटकन मिश्र के पुत्र भावमिश्र हैं।
- ग्रंथ के प्रारम्भ में ही इन्होंने विष्णुपद की वंदना की है,

काल - 16 वीं शती

विषयवस्तु - 23 वर्ग में विभाजित किया है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

1) हरीतक्यादि वर्ग,	**7)** धात्वादि वर्ग,	**13)** दुग्ध वर्ग,	**19)** तैल वर्ग,
2) कर्पूरादि वर्ग,	**8)** धान्य वर्ग,	**14)** दधि वर्ग,	**20)** संधान वर्ग,
3) गुडूच्यादि वर्ग,	**9)** शाक वर्ग,	**15)** तक्र वर्ग,	**21)** मधु वर्ग,
4) पुष्प वर्ग,	**10)** मांस वर्ग,	**16)** नवनीत वर्ग,	**22)** इक्षु वर्ग,
5) वटादि वर्ग,	**11)** कृतान्न वर्ग,	**17)** घृत वर्ग,	**23)** अनेकार्थनाम वर्ग,
6) आम्रादि वर्ग,	**12)** वारि वर्ग,	**18)** मूत्र वर्ग,	

विशेषता -

- कर्पूरप्रकार, कस्तूरीभेद, कुमकुमभेद एवं तगरभेद का वर्णन किया है।
- चविका फल का ग्रहण गजपिप्पली रूप में किया है।
- अष्टवर्ग का विस्तृत वर्णन मिलता है।
- पाँच प्रकार के सुवर्ण और तीन प्रकार के रजत का वर्णन किया है।
- यशद का वर्णन प्रथमतः इसमें मिलता है।
- प्रतिनिधी द्रव्यों की सूची प्रदान की है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

प्रतिनिधि द्रव्य

जब किसी योग में बतायी हुई सभी औषधियाँ नहीं मिल पातीं तो उन औषधियों के तत्सम गुणयुक्त औषधियाँ लेनी पड़ती हैं। इसे उस द्रव्य का प्रतिनिधि द्रव्य कहते।

निम्नोक्त कारण से प्रतिनिधि द्रव्य का प्रयोग करना पड़ता है -

1) जब द्रव्य अप्राप्य होता है।
2) जब कोई द्रव्य बहुत मूल्यवान् होता है और रोगी उतना खर्च करने की स्थिति में न हो।
3) जब द्रव्य का प्रयोग आवश्यक होता है और उसे उसी रूप में प्रयुक्त करने पर हानि की सम्भावना होती हो तब प्रतिनिधि द्रव्य लेने पड़ते हैं।
4) कोई भी प्रतिनिधि द्रव्य के प्रयोग से वह प्रधान औषधि के गुण-कर्म को पूर्ण रूप से पूरा नहीं कर सकते।
5) इसीलिए प्रतिनिधि द्रव्य से मर्यादित लाभ की अपेक्षा रखी जाती है।

जैसे -

- कुष्ठ के बदले पुष्करमूल का प्रयोग करने पर भी पुष्करमूल कुष्ठ की बराबरी नहीं कर सकता किन्तु अधिकांश रूप से उसके कार्य की पूर्ति में सहायक होता है।
- द्राक्षा के अभाव में समान रसविपाक होते हुए भी गंभारी फल से द्राक्षा के समान पूर्णतः कार्य नहीं होता।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

प्रतिनिधिद्रव्य :-

द्रव्य	प्रतिनिधि द्रव्य
मेदा - महामेदा	शतावरी
जीवक ऋषभक	विदारीगन्धा
काकोली क्षीरकाकोली	अश्वगन्धा
ऋद्धि-वृद्धि	वाराहीकन्द

वीर्य-निरूपण

व्युत्पत्ति - **" वीर विक्रान्ते "** धातु से वीर्य शब्द उत्पन्न हुआ है।

परिभाषा - **" येन कुर्वन्ति तद्वीर्यम् ।"**

" वीर्यन्तु क्रियते येन या क्रिया । "

- जिसके द्वारा द्रव्य की क्रिया सम्पादित होती है, उसे वीर्य कहते हैं।
- कोई द्रव्य वीर्य के बिना कुछ भी कार्य नहीं करता।
- सम्पूर्ण क्रियाएँ वीर्य के द्वारा सम्पादित होती हैं।
- द्रव्य जिस शक्ति- विशेष से कर्मों को करने में समर्थ होता है, द्रव्य की उस विशिष्ट शक्ति को वीर्य कहते हैं।

	वीर्यवाद		प्रर्वतक
1)	शक्तिवीर्यवाद / द्रव्यवीर्यवाद	-	चरक, चक्रपाणि
2)	गुणवीर्यवाद / पारिभाषिक वीर्यवाद	-	सुश्रुत, वाग्भट्ट
3)	कर्मवीर्यवाद	-	नागार्जन, निमि

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

वीर्य संख्या -

द्विविधवीर्य -

1) उष्ण
2) शीत

अष्टविधवीर्य - चरक, सुश्रुत

- ✓ **चरक -** गुरु , लघु , स्निग्ध, रूक्ष, शीत, उष्ण, मृदु, तीक्ष्ण
- ✓ **सुश्रुत -** पिच्छिल, विशद, स्निग्ध ,रूक्ष, शीत, उष्ण, मृदु, तीक्ष्ण

वीर्योपलब्धि -

क्रिया	प्रमाण	उदाहरण
1) निपात	प्रत्यक्ष	मरिच (तीक्ष्ण)
2) अधीवास	अनुमान	आनूपमांस (उष्ण)
3) निपात - अधीवास	प्रत्यक्ष + अनुमान	मरिच (उष्ण)

वीर्य का निर्धारण - जो द्रव्य रसविपाक में मधुर होते हैं उनका वीर्य शीत और अम्लरसविपाक तथा कटुरसविपाक द्रव्य का वीर्य उष्ण होता है।

वीर्य	रस	विपाक	द्रव्य
शीत	मधुर, कषाय, तिक्त	मधुर, कटु	दुग्ध, सर्पि, शर्करा, आम्र, लोध्र, निम्ब
उष्ण	अम्ल, कटु, लवण	अम्ल, कटु, मधुर	वृक्षाम्ल, चित्रक,मरिच, पिप्पली

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

किन्तु इसमें कुछ द्रव्य अपवादात्मक होते हैं।

द्रव्य	रस	वीर्य
बृहत्पञ्चमूल	कषाय, तिक्त	उष्ण
सैन्धव	लवण	नोष्ण
अर्क, गुडूची,	तिक्त	उष्ण
हरितकी	कषाय	उष्ण

वीर्य की प्रधानता -

(1) वीर्यवान् द्रव्य –

(2) कर्मनिष्पत्ति ('तेन कर्मकरणात्') –

(3) रसाभिभव ('तुल्यरसगुणेषु विशेषात्') –

(4) आप्तोपदेश –

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

प्रभाव-निरूपण

निरुक्ति - **" प्रकृष्टो भाव: प्रभाव: । "**

द्रव्य के उत्कृष्ट कार्य कर्तृत्व - कर्म करने को प्रभाव कहते हैं,

परिभाषा -

" रसादिसाम्ये यत् कर्म विशिष्टं तत् प्रभावजम् । "

दो द्रव्य के रस - वीर्य - विपाक समान होने पर भी द्रव्य का कोई विशेष कर्म होता है, वह प्रभाव है।

उदाहरण -

- दन्ती और चित्रक रस (कटु), विपाक (कटु) और वीर्य (उष्ण) में **समान** होने पर भी **दन्ती रेचन कर्म** करती है किन्तु **चित्रक नहीं,** क्योंकि दन्ती में विशिष्ट शक्ति है जो चित्रक में नहीं है।
- दुग्ध का रस विपाक मधुर और वीर्य शीत समान है किन्तु **घृत दीपनकर्म** करता है, दुग्ध नहीं करता।

Ayurvedic Formulation

प्रभावजन्य कर्म -

1) **औषधीय कर्म (Pharmacological action) -**

- जैसे दन्ती का रेचन कर्म, घृत का दीपन कर्म, मदनफल का वमन कर्म तथा शंखपुष्पी का मेध्य कर्म।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

2) **अगदीय कर्म (Toxicological action) -**

- वत्सनाभादि विषद्रव्यों का प्राणहर कर्म, अहिफेन भंगा का मदकारी कर्म और शिरीष का विषघ्न कर्म।

3) **रक्षोघ्न कर्म (Antibacterial or Antifungal activity) -**

- गुग्गुलु अगुरु, जटामांसी आदि द्रव्यों का रक्षोघ्न कर्म, अग्निहोत्र - यज्ञादि से वातावरण शुद्धि।

4) **मानस कर्म (Psychological) -**

- वशीकरण, मन्त्र-तन्त्रादि से होने वाले कर्म।

5) **भौतिक कर्म (Physical action) -**

- चुम्बक से शल्यापकर्षण

समान - विचित्रप्रत्ययारब्ध

1) **समानप्रत्ययारब्ध -** जिस द्रव्य में रसानुरूप वीर्यविपाकादि गुण होते हैं उसे समानप्रत्ययारब्ध कहते हैं।

उदाहरण - मधुर रस का विपाक मधुर, वीर्य शीत है। दुग्ध, द्राक्षा, घृत द्रव्य समानप्रत्ययारब्ध द्रव्य हैं।

द्रव्य की उत्पत्ति के कारणभूत महाभूत और द्रव्य के रस वीर्य विपाक की उत्पत्ति के कारणभूत महाभूत समान हों, उसे समानप्रत्ययारब्ध द्रव्य कहते हैं।

उदाहरण - गोधूम - पृथ्वी एवं जल महाभूताधिक्य, मधुररस, मधुरविपाक एवं शीतवीर्य है। पृथ्वी जल महाभूत।

2) **विचित्रप्रत्ययारब्ध -** रसानुरूप वीर्यविपाकादि से द्रव्य के जो समान कर्म होते हैं उससे अलग ही कर्म द्रव्य के हों तो उसे विचित्रप्रत्ययारब्ध द्रव्य कहते हैं।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

उदाहरण - मत्स्यमधुररसविपाक, वीर्य उष्ण, पित्तशामक कर्म न होकर पित्तवर्धन कार्य करते हैं।

जो द्रव्य की उत्पत्ति में कारणभूत महाभूत और द्रव्य के रस-वीर्य-विपाक के महाभूत परस्पर असमान – विरुद्ध गुण वाले हों उन द्रव्यों को विचित्रप्रत्ययारब्ध द्र कहते हैं।

उदाहरण - सैन्धव-उत्पत्ति - पृथ्वी + तेज महाभूत; शीतवीर्य - पृथ्वी+जल महाभूताधिक्यः पित्तवर्धन न होकर पित्तशमन

प्राधान्य - प्रभाव द्रव्यगत पदार्थ में सर्वोपरि है। द्रव्यगत अन्य पदार्थ द्रव्य आश्रित हैं किन्तु प्रभाव द्रव्य का ही स्वभाव है और द्रव्य का स्वभाव होने से सब का आधार है। अतः प्रभाव सर्वप्रधान है।

प्रभाव की प्रधानता -

आचार्य नागार्जुन ने प्रभाव की प्रधानता बताते हुए निम्नांकित युक्तियाँ कही हैं

(1) अचिन्त्यत्वात्
(2) दैवप्रतीघातात्
(3) विषमप्रतीघातात्
(4) तुल्यरसगुणेषु विशेषात्
(5) दर्शनाच्च अद्भुतादीनां कर्मणाम्
(6) आगमात्

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

रस प्रकरण

निरुक्ति - **" रस आस्वादने "**

लक्षण -

" रसनार्थो रसः "

- रसना या जिह्वा इन्द्रिय के द्वारा जिस विषय का ज्ञान हो उसे रस कहते हैं।
- जिह्वा के द्वारा औषधादि द्रव्यों के स्वादगुण का जो बोध होता है उसे रस कहते हैं।
- जिह्वा इन्द्रिय-ग्राह्य विषय ही रस है।

रस संख्या - 6

1) **मधुर रस (मीठा)** - गुड़, चीनी, घृत, द्राक्षा
2) **अम्ल रस (खट्टा)** - तिन्तिडक, चांगेरी
3) **लवणरस (नमकीन)** - सामुद्र, सैन्धव
4) **कटुरस (तीखा)** - मरिच, लंका, पिप्पली
5) **तिक्तरस (कडुआ)** - निम्ब, चिरायता
6) **कषाय रस (कसैला)** - हरीतकी, धातकी

रस के कल्पना भेद - 63

रसों के संयोग भेद - 57

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

रसों की संख्या निर्धारण हेतु मत मतांतर -

Trick

" भद्र शाकुन्तला मोहित हुई हिरण पर कुमार वीर ने धर पकडा कंकड असंख्य। "

प्रवर्तक आचार्य	रस - संख्या	आचार्य-मत रस
भद्रकाप्य	1	जल-रसेन्द्रिय का भावरूप विषय
शाकुन्तेय	2	छेदनीय (लंघन), उपशमनीय (बृंहण)
मौद्गल्य पूर्णाक्ष	3	छेदनीय, उपशमनीय,साधारण
हिरण्याक्ष कौशिक	4	**स्वादु** - हित,अहित , **अस्वादु** - हित, अहित
कुमारशिरा भरद्वाज	5	पार्थिव, जलीय ,आग्नेय, वायव्य , आकाशीय
वार्योविद:	6	गुरु-लघु शीत-उष्ण स्निग्ध-रूक्ष
वैदेह निमि	7	मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त, कषाय, क्षार,
धामार्गव बडिश	8	मधुर, अम्ल लवण, कटु, तिक्त, कषाय, क्षार,अव्यक्त
कांकायन	अपरिसंख्येय	असंख्य
पुनर्वस आत्रेय	6	**मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त, कषाय**

रसों की पाञ्चभौतिकता -

- द्रव्य पाञ्चभौतिक हैं अत: उसी के आश्रित रस भी पाञ्चभौतिक हैं।
- छ रसों की योनि अर्थात् उत्पत्ति का कारण जल है।
- अंतरिक्ष जल **अव्यक्त रसयुक्त** होता है। जब वह पृथ्वी के साथ मिलता है तब जल में से मधुरादि षड् रसों की उत्पत्ति होती है।
- **रस का आधार कारण जल और पृथ्वी है।**
- रस की उत्पत्ति में भी जल और पृथ्वी **कारण द्रव्य** हैं। **विशेष ज्ञान** में वायु, आकाश और अग्नि कारण होते हैं।

किन्तु रसों की विशिष्टता के कारण शेष तीन महाभूत भी रस की उत्पत्ति में कारणीभूत होते हैं। अतएव आचार्य सुश्रुत ने कहा है कि -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

- उत्तरोत्तर महाभूतों में पूर्व-पूर्व भूत के अनुप्रवेश से आकाश, वायु, तेज, जल और भूमि में शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध-ये पाँचों गुण एक-एक की वृद्धि से रहते हैं।
- अत: रस जल का नैसर्गिक गुण होने से आप्य (जलीय) है।
- यद्यपि पञ्चमहाभूतों के परस्पर संसर्ग से, परस्पर एक-दूसरे के अनुग्रह से एवं एक-दूसरे में प्रविष्ट होने से सब पाँचभौतिक हैं तथापि जिस द्रव्य में जिसकी प्रधानता होती है उसी के नाम से वह द्रव्य पहचाना जाता है।
- अत: रस में जल की अधिकता होने से वह जलीय है।

संक्षेपत -

- जलमहाभूत-मुख्यरूप से योनि-उत्पत्ति—का कारणभूत।
- पृथ्वीमहाभूत-जल का सम्बन्ध होने से रसोत्पत्ति अर्थात् आधारमहाभूत।
- अग्नि-वायु-आकाश-परस्पर संसर्ग एवं अनुग्रह से उत्पत्तिकारणीभूत महाभूत।

षड् रसो का पंचभौत्तिक संगठन -

रस	चरक और वागभट्ट	सुश्रुत
मधुर	जल + पृथ्वी	पृथ्वी + जल
अम्ल	पृथ्वी + अग्नि	जल + अग्नि
लवण	जल + अग्नि	पृथ्वी + अग्नि
कटु	वायु + अग्नि	वायु + अग्नि
तिक्त	वायु + आकाश	वायु + आकाश
कषाय	वायु + पृथ्वी	वायु + पृथ्वी

षड् रसो एवम ऋतुओं में संबंध -

रसोत्पत्ति	महाभूताधिक्य	ऋतु
तिक्त	वायु + आकाश	शिशिर
कषाय	वायु + पृथ्वी	वसन्त
कटु	वायु + अग्नि	ग्रीष्म
अम्ल	पृथ्वी + अग्नि	वर्षा
लवण	जल + अग्नि	शरद्
मधुर	पृथ्वी + जल	हेमन्त

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

रस और अनुरस

रस - **" तत्र व्यक्तो रसः स्मृतः । "**

- द्रव्य में स्थित प्रधान रसनाग्राह्य गुण को रस कहते हैं।
- द्रव्य का सेवन करते समय या सेवन करने के बाद जो स्पष्ट रस प्रतीत होता है वह रस है।

अनुरस -

" व्यक्तः शुष्कस्य चादौ च रसो द्रव्यस्य लक्ष्यते । विपर्ययेणानुरसो रसो नास्तीह सप्तमः । "

अर्थात् आर्द्र द्रव्य का या कोई भी द्रव्य का जिह्वा से संयोग होने पर जिस रस की अन्त में कुछ व्यक्तता होती है उसे अनुरस कहते हैं।

रस और अनुरस के लक्षण -

1) जो पूर्णत: व्यक्त होता है, अत: इसकी प्रत्यक्ष उपलब्धि मधुर-अम्लादि रूप में स्पष्ट रूप से होती है।

उदाहरणार्थ - पिप्पली का कटु रस , हरीतकी मे कषाय रस आदि।

2) **रस** द्रव्य की शुष्कावस्था में स्पष्ट रूप से प्रतीत होता है। **अनुरस** द्रव्य की शुष्कावस्था तक स्थायी नहीं रहता।

3) आर्द्रद्रव्य की आर्द्रावस्था में जो रस रहता है वह शुष्कावस्था तक स्थायी नहीं रह पाता , जो रस शुष्कावस्था तक स्थिर रहे शुष्कावस्था में व्यक्त हो वह प्रधान रस है जैसे -

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

- द्राक्षा में आर्द्र तथा शुष्क अवस्था में विद्यमान मधुर रस 'रस' कहा जाता है।
- पिप्पली आर्द्रावस्था में मधुर होती है किन्तु शुष्क होने पर कटु हो जाती है ,अत: कटु रस और मधुर अनुरस।

4) द्रव्य का रसना इन्द्रिय से सम्पर्क होते ही जो रस प्रथम प्रतीत होता है वह **रस** कहा जाता है, जो अन्त में प्रतीत होता वह **अनुरस है**।

उदाहरणार्थ - हरीतकी में प्रथम कषाय रस, अन्त में मधुर रस की प्रतीति होती है।

रस अनुरस में अंतर -

रस	अनुरस
पूर्णत: व्यक्त	अव्यक्त या ईषव्यक्त
शुष्कावस्था में स्थायी	शुष्कावस्था में अस्थायी
जिह्वासंयोग से स्पष्टत: प्रथम प्रतीत	अन्त में प्रतीत

रस उपलब्धि के कारण -

" प्रत्यक्षतोऽनुमानादुपदेशतश्च रसानामुपलब्धिः । "

1) प्रत्यक्ष
2) अनुमान
3) आप्तोपदेश

प्रत्यक्ष प्रमाण - सर्वाधिक उपयोग प्रत्यक्ष प्रमाण का ही होता है

" रसो निपाते द्रव्याणाम् । "

द्रव्यों का जब जिह्वा पर निपात-स्पर्श होता है तब मधुरादि रसों का ज्ञान होता है।

उदाहरणार्थ - आम्र का मधुररस, इमली का अम्लरस

अनुमान एवम आप्तोपदेश प्रमाण - कुछ द्रव्यों का ज्ञान अनुमान और आप्तोपदेश से होता है।

जैसे - सुवर्ण के कषाय और मधुर रस का ज्ञान आप्तोपदेश तथा शरीर पर उसके कर्मों को देख कर अनुमान से किया जाता हैं।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628, 8962265728

रसों का वर्गीकरण -

1) सौम्य और आग्नेय रस \ विदाही - अविदाही रस -

सौम्य रस \ अविदाही	मधुर, तिक्त, कषाय
आग्नेय रस \ विदाही	कटु, अम्ल, लवण

2) दोष प्रकोप और शामक रस -

दोष	प्रकोपक	शामक
वात	कटु, तिक्त, कषाय	मधुर, अम्ल, लवण
पित्त	कटु, अम्ल, लवण	मधुर, तिक्त, कषाय
कफ	मधुर, अम्ल, लवण	कटु, तिक्त, कषाय

षड् रस के लक्षण -

1) मधुर रस -

" स्नेहनप्रीणनाह्लादमार्दवैरुपलभ्यते | मुखस्थो मधुरश्चास्यं व्याप्नुवँल्लिम्पतीव च "

- शरीर में स्निग्धता उत्पन्न करना
- प्रीणन
- आह्लादन, मार्दवता उत्पन्न करना
- मुख में मधुरता का निर्माण होकर शीघ्रता से फैल जाता है। लेप की तरह प्रतीत होता है
- पिपीलिका-कीटादि को प्रिय होता है

Ayurvedic Formulation

2) अम्ल रस -

" दन्तहर्षान्मुखास्रावात् स्वेदनान्मुखबोधनात्। विदाहाच्चास्यकण्ठस्य प्राश्यैवाम्लं रसं वदेत् "

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

- दंतहर्षकर (दाँत खट्टे होना)
- मुख से लालास्राव (स्वेद लाना)
- मुखबोध अर्थात् प्रथम खाये हुए रसों को लालास्राव क्रिया से प्रक्षालन करके अन्य रस के स्वाद का ज्ञान कराता है
- मुख और कण्ठ में दाह उत्पन्न करता है
- अक्षि और भ्रू का निकोचन होता है

3) लवण रस -

" प्रलीयन् क्लेदविष्यन्दमार्दवं कुरुते मुखे । यः शीघ्रं लवणो ज्ञेयः स विदाहान्मुखस्य च "

- खाने के बाद शीघ्र ही जो रस मुख में गीलापन उत्पन्न करता है
- लालास्राव कराता है तथा मुख में मृदुता उत्पन्न करता है
- मुख और कण्ठ में दाह उत्पन्न करता है
- खाने में रुचि उत्पन्न करता है
- कफ को स्रवित करता है

4) कटु रस -

" संवेजयेद् यो रसनां निपाते तुदतीव च । विदहन् मुखनासाक्षि संस्रावी स कटुः स्मृतः ।। "

- निपातमात्र से-जो रस जिह्वा का स्पर्श करते ही जिह्वा में उद्विग्नता उत्पन्न करता है
- शरीर में सुई चुभने-सी वेदना उत्पन्न करते हैं
- मुख, नासिका और नेत्र में दाह उत्पन्न करते हुए नेत्र, नासा एवं मुख से जल का स्राव
- जिह्वा अग्रभाग में बाधा या झनझनाहट उत्पन्न करता है , शिर को भारीपन से जकड़ देता है

5) तिक्त रस -

" प्रतिहन्ति निपाते यो रसनं स्वदते न च । स तिक्तो मुखवैशद्यशोषप्रह्लादकारकः "

- जो रस जिह्वा के सम्पर्क में आते ही जिह्वा की संवेदना नष्ट कर देता है
- जिह्वा को जो प्रिय नहीं होता
- मुख में विशदता, शोष एवं प्रह्लाद उत्पन्न करने वाला होता है
- मुख में रूक्षता उत्पन्न करता है किन्तु बाद में आस्वाद उत्पन्न करता है

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

6) कषाय रस -

" वैशादद्स्तम्भजाड्यैर्यो रसनं योजयेद्रसः । बध्नातीव च यः कण्ठं कषायः स विकास्यपि ।। "

- जो रस जिह्वा से संयुक्त होने पर जिह्वा में विशदता, स्तम्भ और जड़ता उत्पन्न करता है
- जिसके सेवन से गला बँधने की तरह प्रतीत होता है
- जो रस विकासी गुण युक्त होता है वह कषायरस है
- यह कण्ठ का संकोच करता है
- हृदय को खीचता है और पीड़ित करता है

लालास्राव के आधार से षड्रसों का प्रभाव - कार्य निम्नोक्त रूप से देखा जाता से -

1) **स्रावर्धक कटुरस** - अम्लरस
2) **स्रावशोषक तिक्तरस** - कषायरस
3) **सान्द्रतापपरिवर्तक** - मधुररस, लवणरस

रसों के कर्म -

मधुर रस	अम्ल रस	लवण रस
सप्तधातु, ओजवर्धक, **आयुष्यः**	**देहं बृंहयति,** ऊर्जयति, प्रीणयति	**च्यावन,** छेदन, भेदन, तीक्ष्ण सर
षडिन्द्रिय प्रसादन	इन्द्रियाणि दृढ़ीकरोति	**सर्वरसप्रत्यनीक भूतः**
प्रीणन, जीवन, तर्पण	**हदयं तर्पयति**	स्तम्भबन्धसंगातविधमनः
ब्लवर्णकर, शरीरसात्म्य	**मनो बोधयति**	स्रंस्यवकाशकरो
पित्तविषमारूतघ्न	वातमनुलोमयति	**वातहरः,** कफं विष्यन्दयति
तृष्णादाह प्रशमन	**भक्तं रोचयति**	**रोचयत्याहारम्**
त्वच्य, केश्य, कण्ठय, बल्य	**अग्नि दीपयति**	**दीपन, पाचन**
वृंहण, स्थैर्यकर	**बलं वर्धयति**	**मार्गान् विशोधयति**
क्षीतक्षतससन्धान करो	**भुक्तम अपकर्षयति**	**आहार योगी**
दाहमूर्च्छाप्रशमन	क्लेदयति	क्लेदनो
षट्पदपिपीलिकाना मिष्टतमः	जरयति	सर्वशरीरवयवान् मृदुकरोति
घ्राणमुखकण्ठौष्ठजिह्वा प्रह्यदनो	आस्यमास्रावयति	आस्यमास्रावयति

कटु रस	तिक्त रस	कषाय रस
वक्त्रं शोधयति, अग्नि दीपयति	स्वयमरोचिष्णुरप्यरोचकघ्नो	**संशमन**
रोचयत्यशनं	मूर्च्छादाह, कण्डूकुष्ठ तृष्णाप्रशमन	**संधानकर**
भुक्तं शोषयति	त्वंगमांसयो स्थिरीकरणो	**संग्राही, स्तंभन**
शोणितसंघात भिनत्ति	**दीपन पाचन**	**पीडन**
स्फुटीकरोतीन्द्रियाणि	**विषघ्न**	**रोपण**
चक्षुविरेचयति	**कृमिघ्न**	**शोषण**
स्नेहस्वेदक्लेदमलानुपहन्ति	**ज्वरघ्न, स्तन्यशोधन**	श्लेष्म रक्तपित्त प्रशमन
कण्डू र्विनाशयति	**लेखन**	शरीरक्लेदस्योपयोक्ता
व्रणानवसादयति	क्लेदमेदोवसामज्जालसिका	**पक्षवधग्रहपतानकार्दिन प्रभृततीश्च**
क्रिमीन् हिनस्ति	पूयस्वेद मूत्र..... उपशोषण	

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

रसो के अतिसेवन जन्य लक्षण -

1) मधुर रस के अतिसेवन जन्य लक्षण -

- श्वास, कास, प्रतिश्याय
- ग्लगण्ड, गण्डमाला, गलशोफ
- दौर्बल्य अग्नि, अतिस्वप्न

2) अम्ल रस के अतिसेवन जन्य लक्षण -

- दन्तान् हर्षयति, तर्षयति
- सम्मीलयत्यक्षिणी, रक्त दूषयति
- मांसविदहति, कायंशिथिलीकरोति

3) लवण रस के अतिसेवन जन्य लक्षण -

- मूर्च्छयति, तापयति, दारयति
- रक्तं वर्धयति, विषं वर्धयति, पुंस्त्वमुपहन्ति
- शोफान् स्फोटटयति, इन्द्रियाण्युपरूणद्धि

4) कटु रस के अतिसेवन जन्य लक्षण -

- पुंस्त्वमुपहन्ति, ग्लायपति
- मूर्च्छयति, नमयति, भ्रमयति
- तृष्णा जनयति

5) तिक्त रस के अतिसेवन जन्य लक्षण -

- सोत्रसां खरत्वमुपपादयति
- कर्षयति, मोहयति, भ्रमयति
- ग्लपयति, वदनमुपशोषयति

6) कषाय रस के अतिसेवन जन्य लक्षण -

- आस्यं शोषयति, विष्टम्भं जरां गच्छति
- कर्शयति, ग्लपयति, तर्षयति हदयंपीडयति
- स्रोतांस्यवबध्नाति, पुंस्त्वमुपहन्ति

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

आहार में रसों का प्रयोग क्रम -

आचार्य सुश्रुत अनुसार -

- **प्रथम अवस्था** - मधुररस,
- **मध्यम अवस्था** - अम्ल, लवणरस
- **अंतिम अवस्था** - कटु, तिक्त-कषाय रस

कारण -

1) **प्रथम -**

- मधुर रस-भोजन के पूर्व आमाशय रिक्त होता है तब वात की बहुलता रहती है। भोजन में पहले मधुर रस का सेवन करने से वात का शमन हो जाता है।
- क्लेदक कफ का उदीरण होकर अन्नक्लेदन योग्य रूप से होता है।

2) **मध्यम -**

- अम्ल-लवण-मधुर रस के बाद अम्ल और लवण रस का प्रयोग किया जाता है
- जिससे वात का शमन होता है और आग्नेय होने के कारण अग्नि को बढ़ाता है जिससे पाचन की शुरूआत होकर अन्नपाचन कराता है।

Ayurvedic Formulation

3) **अन्तिम -**

- कटु-तिक्त-कषाय-अन्त में कषाय, कटु एवं तिक्त रसों का प्रयोग होता है
- जिससे अग्नि प्रदीप्त होकर अन्नपाचन करता है। भोजनोत्तर अवशिष्ट कफ का अपने तीन रसों के गुण रूक्ष एवं लघु से शमन होता है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

औषध में रसों का प्रयोग क्रम -

दोष	आदि	मध्य	अंत
वात	लवण	अम्ल	मधुर
पित्त	तिक्त	मधुर	कषाय
कफ	कटु	तिक्त	कषाय

रस प्रधानता -

1) अधिकार
2) उपदेश
3) अनुमान
4) आगम
5) उपसंहार
6) व्याप्तिनिमित्ता
7) अपदेश
8) नानाविषयत्वात
9) प्रवृत्तिनिमित्तता
10) आशुकारित्व
11) गुणव्यपदेश

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

कर्म - निरूपण

निरक्ति - **' क्रियते इति कर्म '** अर्थात् जो किया जाये वह कर्म है।

' क्रि विक्षेपे ' धातु में **'मनिन्' प्रत्यय** लगाने से कर्मन् शब्द बनता है, जिससे प्रथम वचन का रूप 'कर्म' होता है।

परिभाषा -

" प्रयत्नादि कर्म चेष्टितम् उच्यते। "

प्रयत्न आदि के द्वारा की गयी चेष्टा (क्रिया) को कर्म कहते हैं। यहाँ पर यत्नपूर्वक या श्रमपूर्वक जो चेष्टा की जाती है उसे कर्म माना है।

कर्म के लक्षण -

" संयोगे च विभागे च कारणं द्रव्यमाश्रितम्। कर्तव्यस्य क्रिया कर्म, कर्म नान्यदपेक्षते॥ " (च० सू०)

" एकद्रव्यमगुणं संयोगविभागेष्वनपेक्षकारणमिति कर्मलक्षणम्। " (वै० द०)

जो एक ही साथ संयोग और विभाग में कारण हो, द्रव्य के आश्रित हो उसे कर्म हैं , कर्त्तव्य की क्रिया को कर्म कहते हैं। यह कर्म संयोग एवं विभाग में किसी कारण की अपेक्षा नहीं करता अर्थात् कर्म केवल क्रिया की अपेक्षा करता है।

प्रशस्तपाद में कर्म के उपरोक्त लक्षणों के अतिरिक्त अन्य लक्षण और बतलाये गये हैं, जो निम्नलिखित हैं -

1) कर्म केवल मूर्तद्रव्यों (पृथिवी, जल, अग्नि, वायु और मन) में ही पाया जाता है, अमूर्त एवं विभु द्रव्यों (अकाश, काल, दिशा तथा आत्मा) में नहीं।
2) कर्म कभी नित्य नहीं होता।
3) कर्म गुरुत्व, द्रवत्व, प्रयत्न और संयोग के कारण उत्पन्न होते हैं।
4) संयोग विभाग का हेतु होने के कारण कर्म में कारणत्व पाया जाता है।
5) नवीन संयोग जिस कर्म के द्वारा उत्पन्न होता है, उसी का नाश भी कर देता है, अतः इस लक्षण को - **' स्वकार्यसंयोगविरोधित्व '** कहते हैं; जिस प्रकार बीज अंकुर को जन्म देकर स्वयं नष्ट हो जाता है, उसी प्रकार कर्म भी कार्य (नवीन संयोग) को उत्पन्न कर स्वयं समाप्त हो जाता है।
6) एक द्रव्य दूसरे द्रव्य को और एक गुण दूसरे गुण को उत्पन्न कर सकता है। लेकिन कर्म से कर्म की उत्पत्ति नहीं होती।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

कर्म के भेद - कर्म दो प्रकार के होते हैं -

आध्यात्मिक कर्म - आध्यात्मिक कर्म तथा सद्वृत आदि विहित मंगलस्वस्त्ययन आदि का अनुष्ठान स्वस्थातुर के लिए करना हितकर है।

लौकिक कर्म - द्रव्याश्रित संयोग में विभाग अनपेक्ष कारण होता है, इसके पाँच प्रकार होते हैं ; यथा -

" उत्क्षेपणं ततोऽवक्षेपणमाकुवनं तथा। प्रसारणं च गमनं कर्मण्येतानि पञ्च च ॥

1) **उत्क्षेपण (Going upward) -** उत्क्षेपण का अर्थ होता है ऊपर उठना या ऊपर जाना उत्प्रेषणम्' तर्कसंग्रह के अनुसार 'ऊर्ध्वदेशसंयोगहेतुः अर्थात् जिस कर्म के द्वारा वस्तु का ऊपरी प्रदेश के साथ संयोग होता है, उसे उत्क्षेपण कहते हैं।

2) **अवक्षेपण (Going downward) -** अवक्षेपण का अर्थ होता -नीचे की ओर जाना या नीचे गिरना तर्कसंग्रह के अनुसार- 'अधोदेशसंयोगहेतुः अवक्षेपणम्' अर्थात् जिस कर्म के द्वारा वस्तु का अधोप्रदेश के साथ संयोग हो, वह अवक्षेपण है।

3) **आकुञ्चन (Contraction) -** आकुञ्चन का अर्थ होता हैसिकुड़ना या संकुचित होना। तर्कसंग्रहकार के शब्दों में शरीरस्य सन्निकृष्टसंयोगहेतुः आकुञ्चनम्' अर्थात् जिस कर्म के द्वारा वस्तु का शरीर के और भी सन्निकट प्रदेशों के साथ संयोग होता है, आकुञ्चन कहलाता है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
91 8319811628, 8962265728

4) **प्रसारण (Expansion) -** प्रसारण का अर्थ होता है - प्रसार करना या फैलाना। तर्कसंग्रह के अनुसार- 'विप्रकृष्टसंयोगहेतुः प्रसरणम्' अर्थात् जिस क्रिया के द्वारा वस्तु अथवा उसके अङ्ग-प्रत्यंगों का दूरवर्ती प्रदेश के साथ संयोग होता है, उसे प्रसारण कहते हैं।

5) **गमन (Locomotion) -** जिसके संयोग विभाग के कारणरूप कर्म की दिशा तथा प्रदेश अनियत हो, उसे 'गमन' कहते हैं। गमन का सामान्य अर्थ चलना है। गमन कर्म के अन्तर्गत भ्रमण, रेचन, स्यन्दन, ऊर्ध्व ज्वलन तथा तियंग्गमन आदि सभी कर्म आ जाते हैं।

आचार्य चरक अनुसार -

" कर्मपञ्चविधम् उक्तं वमनादि । "

वमन, विरेचन, आस्थापन बस्ति, अनुवासन बस्ति और नस्य-ये पाँच कर्म हैं।

" षट्त्वं नाति वर्तन्ते त्रित्वं वातादयो यथा । " (च.सू. 26)

द्रव्य के अनेक कर्म होते हुए भी मुख्य छ: कर्म ही हैं।

1) लंघन - कर्षण-कृशता हेतु , उदाहरण - वचा, यव, मधु।
2) बृंहण - मांसवृद्धि - आम्रफलादि मधुररसात्मक द्रव्य।
3) रूक्षण - रूक्षता उत्पन्न करना-खदिर, वचा।
4) स्तम्भन - गतिरोध।
5) स्नेहन - स्निग्धता उत्पन्न करना-घृत, तैल, वसा, मज्जा।
6) स्वेदन-स्वेद उत्पन्न करना-उष्णजल, मरिच, वचा, हिंगु।

दीपन - पाचन कर्म

" पचेन्नामं वह्निकृच्च दीपनं तद्यथा मिशिः । पचत्यामं न वह्निं च कुर्याद् यत्तद्धि पाचनम् ।।

नागकेशरवद् विद्याच्चित्रो दीपन - पाचनः। "

जो द्रव्य (पदार्थ) आम को नहीं पकाता है, किन्तु अग्नि (पाचनशक्ति या पाचक रसों को) बढ़ाता है वह ' दीपन ' कहा जाता है, जैसे- सौंफ। जो द्रव्य आम को पकाता है, किन्तु अग्नि को नहीं बढ़ाता है वह ' पाचन ' कहा जाता है, जैसे- नागकेसर। जो द्रव्य दोनों कार्य करता है वह ' दीपन पाचन ' कहा जाता है, **जैसे- चित्रक**

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

दीपन	पाचन
वायु + अग्नि महाभूत	अग्नि + वायु महाभूत
वायुमहाभूताधिक्य	अग्निमहाभूताधिक्य
अभ्यवहरणशक्तिवृद्धि	जरणशक्तिवृद्धि
अग्नि प्रदीप्त होती है	आहार का पाचन होता है
आहार का पाचन नहीं होता	पाचन का कार्य होता है
अग्निमान्द्य में प्रयोग भूख लगती है	अजीर्ण में प्रयोग होता है
उदाहरण - सौंफ	उदाहरण - नागकेशर

शोधन कर्म

" स्थानाद् बहिर्नयेदूर्ध्वमधश्च मलसञ्चयम् । देहसंशोधनं तत् स्याद्देवदाली फलं यथा ।। "

जो द्रव्य शरीर के मलसंचय को ऊर्ध्व या अधो मार्ग से निकाले उसे संशोधन कहते हैं **यथा - देवदाली फल**

शोधन पाँच प्रकार से होता है -

1) निरुहण वस्ति
2) वमन
3) विरेचन
4) शिरोविरेचन
5) रक्तमोक्षण

शमन कर्म

" न शोधयति यद्दोषान् समानोदीरयत्यपि । समीकरोति विषमाञ्शमनं तद्यथाऽमृता ।। "

जो द्रव्य सम (प्रकृतिस्थ) दोषों को न तो शरीर से बाहर ही निकालता और न कुपित ही करता है, किन्तु बढ़े हुये अथवा घटे हुये दोषों को जो सम या प्रकृतिस्थ कर देता है, उसे ' शमन' कहते हैं, **जैसे- गुरुची**

दोष का शमन सात प्रकार से होता है -

1) पाचन,
2) दीपन,
3) लंघन,
4) प्यासा रहने,
5) व्यायाम करने,
6) आतप (धूप) सेवन एवं
7) वायु सेवन से

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

अनुलोमन कर्म

" कृत्वा पाकं मलानां यद्भित्त्वा बन्धमधो नयेत् । तच्चानुलोमनं ज्ञेयं यथा प्रोक्ता हरीतकी ।। "

जो द्रव्य मलों को पकाकर और उनके बन्ध (गाँठों) को तोड़कर नीचे (गुदमार्ग से अथवा अपने मार्ग से) बाहर निकाल देता है, उसे ' अनुलोमन ' कहते हैं, **जैसे - हरड़**

स्रंसन कर्म

" पक्तव्यं यदपक्त्वैव श्लिष्टं कोष्ठे मलादिकम् । नयत्यधः स्रेसनं तद् यथा स्यात् कृतमालकम् ।। "

जो द्रव्य उदर में चिपके हुये पकाने योग्य (आम) मलादि तो पकाये बिना (अपक्व को) ही गुदमार्ग से निकाल देता है, उसे स्रसन (सरकाने वाला) द्रव्य कहा जाता है, **जैसे अमलतास की गुद्दी**

भेदन कर्म

" मलादिकमबद्धं यद् बद्धं वा पिण्डितं मलैः। भित्त्वाधः पातयति तद् भेदनं कटुकी यथा ।। "

जो द्रव्य ढीले अथवा बँधे हुये अथवा वात आदि दोषों द्वारा पिण्डित (गाँठ बने हुये) मल को तोड़ फोड़कर नीचे गिरा देता है , उसे 'भेदन' या फोड़ने वाला कहा जाता है **जैसे - कुटकी**

रेचन कर्म

" विपक्वं यदपक्वं वा मलादि द्रवतां नयेत् । रेचयत्यपि तज्ज्ञेयं रेचनं त्रिवृता यथा ।। "

जो द्रव्य पके हुये अथवा न पके हुये, मलादि को पतला कर देता है और उसे निकाल भी देता है, उस द्रव्य रेचन' कहते हैं,
जैसे - निशोथ

छेदन कर्म

" श्लिष्टान् कफादिकान् दोषानुन्मूलयति यद् बलात् । छेदनं तद्यथा क्षारा मरिचानि शिलाजतु ।। "

जो द्रव्य सटे या चिपके हुये कफ आदि दोषों को बलपूर्वक उखाड़ देता है, वह ' छेदन ' या काटने वाला कहा जाता है,
जैसे - जौखार आदि क्षार, काली मरिच और शिलाजीत

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

लेखन कर्म

" धातून मलान् वा देहस्य विशोष्योल्लेखयेच्च यत् । लेखन तथा क्षौद्रं नौरमुष्णं वचा यवाः ।। "

जो द्रव्य सम्पूर्ण शरीर की धातुओं और मलों को सुखाकर उखाड़कर ढीला कर निकाल देता है, वह लेखन ' कहा जाता है,
जैसे - शहद, गरम जल, वचा और जौ

ग्राही कर्म

" दीपनं पाचनं यत् स्यादुष्णत्वाद् द्रवशोषकम् । ग्राहि तच्च यथा शुण्ठी जीरकं गजपिप्पली ।। "

जो द्रव्य दीपन (अग्निवर्द्धक) हो, पाचक हो तथा उष्ण होने से द्रव (मल के पतलेपन) को सुखाने वाला हो उसे 'ग्राही' कहते **है जैसे सोंठ, जीरा और गजपीपल**

स्तम्भन कर्म

" रौक्ष्याच्छैत्यात् कषायत्वाल्लघुपाकाच्च यद्भवेत् । वातकृत् स्तम्भनं तत् स्याद् यथा वत्सकटुण्टुकौ ।। "

जो द्रव्य रूक्ष, शीत, कषैला और शीघ्रपाकी होने के कारण वातवर्द्धक होता है, उसे ' स्तम्भन ' कहते हैं **जैसे- कुरैया की छाल और सोनापाठा**

ग्राही	स्तम्भन
प्रायः कटु - तिक्त रस	प्रायः कषाय रस
उष्ण वीर्य युक्त	शीत वीर्य युक्त
अग्नि - वायु महाभूत प्रधान	पृथ्वी वायु महाभूत
वातशमन कार्य	वातवर्धन कार्य
अग्निदीपन कार्य	अग्निमान्द्य कार्य
दीपन, पाचन, उष्णगुण युक्त	रूक्षता, शीतता, कषाय, लघुपाकी
आम का पचन होता है	आम की संचिति होती
आमातिसार में प्रयोग करते हैं	पक्वातिसार में प्रयोग करते हैं
उदाहरण - शुण्ठी, मुस्ता, जीरक, गजपिप्पली	उदाहरण - कुटज, धातकी, वट, उदम्बर

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

प्रमाथी कर्म

" निजवीर्येण यद् द्रव्यं स्रोतोभ्यो दोषसञ्चयम् । निरस्यति प्रमाथि स्यात् तद्यथा मरिचं वचा ।। "

जो द्रव्य अपनी शक्ति से शरीर में से दोषों के सञ्चय को निकाल देता है, वह प्रमाथी कहा जाता है ,
जैसे - मरिच और वचा

अभिष्यन्दी कर्म

" पैच्छिल्याद् गौरवाद् द्रव्यं रुद्ध्वा रसवहा; शिराःधत्ते यद् गौरवं तत् स्यादभिष्यन्दि यथा दधि ।। "

जो द्रव्य अपनी पिच्छिलता (चिप - चिपाहट) से तथा गुरुता (भारीपन) से रसवाहिनी शिराओं को रोककर शरीर में भारीपन उत्पन्न करता है, वह अभिष्यन्दी कहा जाता है **जैसे - दही**

व्यवायी कर्म

" पूर्व व्याप्याखिलं कायं ततः पाकं च गच्छति । व्यवायि तद् यथा भङ्गा फेनं चाहिसमुद्भवम् ।। "

जो द्रव्य पहले सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त होकर (अपना प्रभाव दिखलाकर) फिर पाक को प्राप्त होता (पचता) है, उसे ' व्यवायी ' कहते हैं **जैसे- भाँग तथा अफीम**

विकासी कर्म

" सन्धिबन्धांस्तु शिथिलान् यत्करोति विकासि तत् । विश्लेष्यौजश्च धातुभ्यो यथा क्रमुककोद्रवाः।। "

जो द्रव्य धातुओं से ओज (क्रियाशक्ति) को पृथक् करके सन्धियों के बन्धनों को शिथिल (दुर्बल या ढीले) कर देता है, वह विकाश' कहा जाता है **जैसे - सुपारी एवं कोदों के चावल**

रसायन कर्म

" रसायनं च तज्ज्ञेयं यज्जराव्याधिनाशनम् । यथाऽमृता रुदन्ती च गुग्गुलुश्च हरीतकी । "

जो द्रव्य जरा (बुढ़ापा) और रोगों को नष्ट करता है, वह रसायन कहा जाता है, **जैसे - गिलोय, रुद्रवन्ती, गूगल और हरड़**

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

वाजीकरण कर्म

" यस्माद् द्रव्याद्भवेत् स्त्रीषु हर्षो वाजीकरं च तत् । यथा नागबलाद्या स्युर्बीजं च कपिकच्छुजम् ।। "

जिस द्रव्य (के सेवन) से स्त्रियों के सहवास (मैथुनक्रिया) में अधिक हर्ष की प्राप्ति या उत्साह होता है, उसे ' वाजीकर ' कहते हैं **जैसे - नागबला (खिरैटी) तथा किवाँच आदि के बीज**

जीवनीय कर्म

" जीवनं प्राणसन्धारणं तस्मै हितं जीवनीयम् । "

जीवन - प्राणधारण के लिए हितकर द्रव्य जीवनीय कर्म कहलाते हैं।

द्रव्य - जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, मुद्गपर्णी, माषपर्णी, जीवन्ती और यष्टिमधु ये दश द्रव्य जीवनीय गण में बताये हैं।

मदकारी कर्म

" बुद्धिं लुम्पति यद् द्रव्यं मदकारि तदुच्यते । तमोगुणप्रधानं च यथा मधं सुरादिकम् ।। "

जो द्रव्य तमोगुण की अधिकता के कारण बुद्धि (कर्तव्य अकर्तव्य के ज्ञान) का लोप कर देता है, वह मदकारी कहा जाता है; **जैसे - सुरा, वारुणी आदि अनेक प्रकार के मद्य**

बल्य कर्म

" बल्यमुपचयौजःशक्तिकरत्वात् । "

जो द्रव्य शरीर के बल (Strength) को बढ़ाते हैं उन्हें बल्य ' कहते हैं। ' बल ओज का कार्य माना गया है। बल के अभाव में शरीर अपने कर्मों में असमर्थ हो जाता है।

इसके दो वर्ग किये गये है -

1) **सामान्य -** ये शरीर के सभी अङ्गों की सामान्यतः शक्ति बढ़ाते हैं जैसे - कपिकच्छू, शतावरी आदि, ये धातुवर्धक द्रव्य हैं अत: इनसे ओज अधिक बनाने कारण शरीर को बल अधिक मिलता है।
2) **विशिष्ट -** कुछ द्रव्य विशिष्ट अङ्गों को बल देते हैं, जैसे -
   - हृदय - अर्जुन
   - नाडीसंस्थान - तगर

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

मेध्य कर्म

" मेधायै हितं मेध्यं "

- मेधा (बुद्धि) को बढ़ाने वाला द्रव्य मेध्य कहलाता है, यह कर्म मन से सम्बन्ध रखता है तथा नाडीसंस्थान का कर्म है।
- मेध्य कर्म में शीतवीर्य यथा यष्टिमधु और उष्णवीर्य यथा गुडूची दोनो प्रकार द्रव्य लिए गए है।

- मेधा में ग्रहणशक्ति, धारण शक्ति तथा स्मृति इन तीनों प्रक्रियाओं का समावेश है।
- चरक (चिकित्सास्थान, प्रथम अध्याय) में मण्डूकपर्णी, शङ्खपुष्पी, गुडूची और यष्टीमधुक इन चार मेध्य द्रव्यों का उल्लेख है, विशेषतः इन द्रव्यों में शङ्खपुष्पी श्रेष्ठ मानी गई है।

लंघन कर्म

" लघूष्णतीक्ष्णविशदं रूक्षं सूक्ष्मं खरं द्रवम्। कठिनं चैव यद् द्रव्यं प्रायस्तल्लङ्घनं स्मृतम्।। "

जो लघु, उष्ण, तीक्ष्ण, विशद, रूक्ष, सूक्ष्म, खर, द्रव एवं कठिन हो, वह द्रव्य लंघन अर्थात् शरीर में लघुता या हल्कापन उत्पन्न करने वाला होता है।

बृंहण कर्म

" गुरु शीतं मृदु स्निग्धं बहलस्थूलपिच्छिलम्। प्रायो मन्दस्थिरं श्लक्ष्णं द्रव्यं बृंहणमुच्यते।। "

जो गुरु, शीत, मृदु, स्निग्ध, बहल अर्थात् घन, स्थूल, पिच्छिल, मन्द (चिरकारी), स्थिर एवं श्लक्ष्ण होता है, वह द्रव्य 'बृंहण' (शरीर को बड़ा बनाने वाला) होता है।

कर्म	द्रव्य
दीपन	सौंफ
पाचन	नागकेसर
संशोधन	देवदाली फल
संशमन	गुडुची
अनुलोमन	हरड़
स्रंसन	अमलतास की गुद्दी
भेदन	कटुकी
रेचन	निशोथ
छेदन	क्षार, काली मिर्च, शिलाजीत
लेखन	शहद, नीरमुष्ण, वचा, यव
ग्राही	शुंठी, जीरक, गजपिप्पली
स्तंभन	वत्सक, टुण्टुक
मदकारी	मद्द, सुरा
प्रमाथी	मरिच, वच
अभिष्यन्दि	दही
व्यवायी	भंगा, फेन
विकासी	कोद्रव, क्रमुक
रसायन	अमृता, रुदन्ती, गुग्गुल, हरीतकी

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

वाजीकरण	नागबला, कपिकच्छु
जीवनीय	जीवनीय गण
बल्य	शतावरी
बृंहण	मांस
लंघन	यव, वचा
मेध्य	शंखपुष्पी, यष्टीमधु

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

औषध द्रव्य संग्रह

आचार्य चरक के अनुसार संग्राह्य द्रव्य का स्वरूप सामान्यतः इस प्रकार होना चाहिए -

- **' यानि कालजातानि ' -** जो द्रव्य अपने काल में समय से उत्पन्न हुए हो।
- **' आगतसम्पूर्णरसप्रमाणगन्धानि ' -** जिनमें पूर्ण रसागम हो गया हो , पूरे आकार प्रकार और मोटाई में आ गया हो , सम्पूर्ण गन्ध से युक्त हो।
- **' कालातपाग्निसलिलपवनजन्तुभिरनुपहतम् ' -** काल , आतप , अग्नि , जल , पवन , जन्तु आदि के द्वारा नष्ट न हो।
- **' गन्धवर्णरसस्पर्शप्रभावाणि प्रत्यग्राणि -** गंध , वर्ण , रस , स्पर्श प्रमाणवत् उपस्थित हो।
- **' उदीच्यां दिशि स्थितानि'-** पूर्वमुख या उत्तरमुख होकर ग्रहण करना चाहिए।

औषध संग्रह विधि

आचार्य शारंगधार अनुसार :-

सभी प्रकार की औषधियाँ चिकित्सक द्वारा प्रसन्न चित्त होकर , मनसा - वाचा पवित्र होकर , प्रातःकाल , शुभ दिन , सूर्य की ओर मुख करके मौनधारण कर और हृदय में भगवान शिव को प्रणाम कर संग्रहण करनी चाहिए।

Ayurvedic Formulation

आचार्य चरक अनुसार:-

" मङ्गलाचारः शुचिः शुक्लवासा सम्पूज्य देवहा आश्विनौ गोब्राह्मणांश्च प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा गृहणीयात् ॥ "

अर्थात् मंगलाचार करते हुए , पवित्र होकर , शुक्लपक्ष , देवता - अश्विनीकुमार , गाय , ब्राह्मण की पूजा करके पूर्व या उत्तर दिशा में मुख करके औषधियों को संग्रहण हेतु उखाड़ना चाहिए।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

कारण :-

- उत्तर दिशा हिमालय की ओर संकेत करती है तथा उत्तर दिशा के दिक्पाल चन्द्रमा को बताया गया है जो औषधि के अधिपति माने गये हैं।
- पूर्व दिशा के स्वामी सूर्य है जो औषधि में शक्तिसंचार करते हैं।

द्रव्य संग्रहकाल

जिन औषधिद्रव्य का प्रयोग किया जाता है उनके प्रयोज्य अंग , ऋतु , वीर्यता आदि का विचार करके निश्चित काल में द्रव्यों का संग्रह करते हैं।

(1) प्रयोज्य अङ्गानुसार द्रव्य संग्रह :-

द्रव्यों के विभिन्न प्रयोज्य अंग का चिकित्सा में प्रयोग किया जाता है। जिस समय वह अङ्ग पूर्ण परिपाक तथा विकास की चरम सीमा पर हो तभी उस अङ्ग का अहण करना चाहिए। **आचार्य चरक** ने निम्न द्रव्यों के संग्रह का काल बताया है :-

प्रयोज्य अंग	ऋतुकाल
त्वक् , कन्द , क्षीर	शरद् (TKKS)
मूल	ग्रीष्म , शिशिर (जब पत्र झड़ गये हों अथवा गिर कर नये निकले हों) (MGS)
शाखा , पत्र	वर्षा ,वसंत (जब विकास की प्रौढ़ावस्था में हो) (SPVV)
सारभाग	हेमन्त ऋतु
पुष्प , फल	यथाऋतु (जिस ऋतु में पुष्प खिलें तथा फल परिपक्व हों उसमें)

(2) वीर्य नुसार द्रव्य संग्रह :-

1) **आग्नेय (उष्णवीर्य) :-**
   - द्रव्य आग्नेय ऋतुओं (आदानकाल) में तथा आग्नेय भूमि चाहिए।
   - इससे उनमें कटु , रूक्ष , उष्ण आदि गुण अधिक होते हैं।
   - उष्णवीर्य द्रव्य विन्ध्यप्रदेश से लेना चाहिए।

2) **सौम्य (शीतवीर्य):-**
   - ओषधियाँ सौम्य ऋतुओं (विसर्गकाल) तथा सौम्य भूमि में उत्पन्न लेनी चाहिए।
   - ऐसो लेने से इनमें मधुर , स्निग्ध , शीत आदि गुण विशिष्ट होते हैं।
   - शीतवीर्य द्रव्य हिमालय प्रदेश से लेना चाहिए।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

(3) कर्म अनुसार द्रव्य संग्रह :-

1) सर्व कर्म के लिए - **शरद् ऋतु**
2) वमन कर्म - **वसन्त ऋतु**
3) विरेचन कर्म - **वसन्त ऋतु**

4) द्रव्यों के अवयवों का संग्रहण :-

1) फल : - त्रिफला , दाडिम , सुपारी , मरिच , पिप्पली , विडंग , मदनफल।
2) कन्द : - हरिद्रा , आर्द्रक ,
3) पत्र : - तालीश , रास्ना , सनाय , तुलसी , पटोल , वासा , तेजपत्र।
4) क्षीर :- अर्कक्षीर , स्नुहीक्षीर , वटक्षीर।

औषध द्रव्य संरक्षण (Preservation of Aushadhi dravya)

(1) शुष्क विधि (Dry preservation)

- संग्रहीत द्रव्यों को जलशोषक पेपर (Blotting paper) के बीच दबाकर खा जाता है जिससे उनका जलीयांश शोषित हो जाता है किन्तु आकार वैसे ही रहता है। इस प्रकार द्रव्य चिरकाल तक रहते हैं और उससे द्रव्य का परिचय (Identification) प्राप्त हो सकता है।
- इस प्रकार से यदि अच्छी तरह न सूखे तथा जलीयांश उसमें रह गया हो तब थोड़ी देर धूप में सुखा लेना चाहिए , पूर्णत: सूख जाने के बाद पृथक् कागज पर लगाकर चिपकाकर प्लास्टिक की थैली में काच की फ्रेम बनाकर सुरक्षित रखना चाहिए (Herbarium sheets) .

(2) आद्र विधि (Wet preservation)

- औषधि को पूर्णरूप में पञ्चाङ्ग सहित फार्मेलन के 5- 10 विलयन में रखकर काच के आच्छादित पात्र में रख दिया जाता है। इससे द्रव्य सालों तक बिगड़ने नहीं पाते। आवश्यकतानुसार विलयन बदलते रहना चाहिए।
- ग्लीसरीन में औषधिद्रव्य रखने से मूल रंग में वे वर्षों तक रहते हैं।
- यह संरक्षण केवल प्रदर्शन प्रयोजनार्थ और संग्रहालय में संग्रह हेतु- परिचय हेतु ही उपयोगी है , क्योंकि इन औषधियों का शरीर पर प्रयोग नहीं हो सकता।
- आभ्यंतर प्रयोगार्थ द्रव्यों को सुरक्षित रखना है तो मधु , तैल , घृत एवं कॉजी में पूर्णतया दुबोकर रखना चाहिए।
- आजकल Air tight इब्बों में सुरक्षित रखा जाता है।

Ayurvedic Formulation

भेषजागार

द्रव्यों का संग्रह करने के बाद उनका संरक्षण विधिपूर्वक होना चाहिए अन्यथा दूषित होने के कारण वह प्रयोग के योग्य नहीं रहेंगे इसीलिए औषधिद्रव्य का संग्रह करने के बाद उनका व्यवस्थित संरक्षण करने के लिए एक स्वतन्त्र भेषजागार की आवश्यकता होती है तथा संग्रहीत किये हुए द्रव्य योग्य पात्र में रखकर भेषजागार में रखना चाहिए।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 896265728

{ **Note -** योग्य पात्र में रखने का कारण यह है कि धातु के पात्र की रासायनिक क्रिया इसमें न हो। मिट्टी या काँच के पात्र में औषधिद्रव्य रखनी चाहिए। }

1) भेषजागार पूर्व और उत्तर की ओर द्वारवाला होना चाहिए।
2) वायु का संचार अनुकूल हो , अधिक झोंका न आता हो।
3) निरंतर पुष्पोपहार , गंध , धूप , बलिकर्मादि से उसकी शुद्धि होती रहनी चाहिए।
4) अग्नि , वर्षा , धूप , जन्तु , चूहे , चौपाये आदि प्राणियों का प्रवेश अथवा सम्पर्क न हो।
5) निम्बपत्र के समान जन्तुनाशक एव कृमिघ्न द्रव्य से आच्छादन करके स्वच्छ पात्र में द्रव्य रखने चाहिए।

विपाक - निरूपण

पर्याय - परिणाम, जरण, पाक, प्रपाक, विपाक, परिपाक, जरा

परिभाषा -

" जाठरेणाग्निना योगात् यदुदेति रसान्तरम् । रसानां परिणामान्ते स विपाक इति स्मृतः ।। "

(अ.हृ.सू.)

जाठराग्नि के संयोग के बाद पाचन की अवस्था में जो अन्तिम रस बनता है उसे विपाक कहते हैं ।

अवस्थापाक और निष्ठापाक

अवस्थापाक -

- भुक्त आहार के स्थानभेदानुसार अवस्थानुरूप जो पचन होता है, वह 'अवस्थापाक' है ।
- पाचनकाल में आहार द्रव्यों जो परिवर्तन होते हैं वे तीन अवस्थाओं में से गुजरते हैं।

अवस्थापाक की तीन अवस्थाएँ होती है -

1) मधुर अवस्था पाक [भुक्तमानावस्था, आमावस्थो]
2) अम्ल अवस्था पाक [पच्यमानावस्था, विदग्धावस्था]
3) कटु अवस्था पाक [पक्वावस्था]

(1) प्रथमावस्था (मधुर अवस्थापाक) -

" अन्नस्य भुक्तमात्रस्य षड्रसस्य प्रपाकतः । मधुराद्यात् कफो भावात् फेनभूत उदीर्यते ।। "

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 896265728

षड् रसों से युक्त खाये हुए अन्न के प्रथम पाक में पहले **मधुर भाव उत्पन्न** होता है तथा झाग के समान कफ उदीर्ण होता है

यह **अवस्थापाक आमाशय में** सम्पन्न होता है, जहाँ सम्पूर्ण अन्न ही माधुर्य को प्राप्त करता है। मधुरता के कारण यह अवस्थापाक **मलभूत कफ की वृद्धि** करता है ।

(2) द्वितीयावस्था (अम्ल अवस्थापाक) -

" परं तु पच्यमानस्य विदग्धस्याम्लभावतः । आशयाच्च्यवमानस्य पित्तमच्छमुदीर्यते ।। "

(च.चि.)

- मधुर अवस्था पाक के पश्चात् अन्न विदग्ध **होकर अम्ल भाव** को प्राप्त होता है |
- [आमाशय में अम्ल प्रतिक्रिया वाले पाचक रसों के संयोग से] अम्लीभूत अन्न जब आमाशय से पच्यमानाशय [ग्रहणी-क्षुद्रान्त्र] में प्रवेश करता है तो अच्छपित्त [bile] उदीर्ण होकर आहार भाग में मिल जाता है।
- द्वितीय **अवस्थापाक पच्यमानाशय में** होती है।
- इस अवस्थापाक में भी आहार में पित्तवर्धक रस अधिक हो **तो पित्त का उदीरण** विशेष होता है।
- अम्लरस के आधिक्य से मलभूत **पित्त का प्रार्दुभाव होता** है।

(3) तृतीयावस्था (कटु अवस्थापाक) -

" पक्वाशयं तु प्राप्तस्य शोष्यमाणस्य वह्निना। परिपिण्डितपक्वस्य वायु: स्यात्कटुभावत:।। "

- जब भुक्त आहार पक्वाशय में पहुंचता है और अग्नि द्वारा सुखाया जाता है। तब वह पककर पिण्डित हो जाता है और उसमें **कटु भाव** उत्पन्न हो जाता है।
- इस कारण इस **समय वात की वृद्धि** होती है।

रसों का यह परिवर्तन आवस्थिक होने के कारण इसे अवस्थापाक कहते हैं।

निष्ठापाक / विपाक -

- आहार के पाचन के पश्चात् उसके सार अंश का आन्त्रभित्ति द्वारा अवशोषण हो जाता है। शोषण होने के पश्चात् इस अन्न रस में जो परिवर्तन होते हैं उन्हें निष्ठापाक तथा विपाक कहते हैं।।
- निष्ठापाक में रसों का अंतिम परिणमन होता है।

Ayurvedic Formulation
Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 896265728

अवस्थापाक और निष्ठापाक में अंतर

अवस्थापाक (Stages of Digestion)	निष्ठापाक (Final Product of Digestion)
पचन की शुरूआत में पचन पूर्व काल में होता है।	पचन प्रक्रिया समाप्त होने पर।
स्थान – काल सापेक्ष है।	स्थान - काल निरपेक्ष है।
आवस्थिक परिणाम	स्थायी परिणाम
दोषों का उदीरण (मलभूत)	प्रसाद रूप दोषों का उदीरण
प्रत्यक्षगम्य	अनुमानगम्य

विपाक़ के भेद -

त्रिविध विपाकवाद	द्विविध विपाकवाद
आत्रेय सम्प्रदाय	धन्वन्तरि साम्प्रदाय
रसानुसार निर्धारित है	गुणानुसार निर्धारित है
आचार्य चरक जी **ने मधुर ,कटु ,अम्ल** विपाक माना है	आचार्य सुश्रुत ने **गुरु,लघु** विपाक माना है

विपाक के गुण - कर्म

विपाक	गुण	दोषकर्म	धातुकर्म	मलकर्म
मधुर विपाक	स्निग्ध, गुरु	कफवर्धक	शुक्रल	सृष्टविण्मूत्रमारुत
अम्लविपाक	स्निग्ध, लघु	पित्तवर्धक	शुक्रनाशन	सृष्टविण्मूत्रमारुत
कटुविपाक	रूक्ष, लघु	वातवर्धक	शुक्रनाशन	बद्धविण्मूत्रमारुत

विपाक	दोषकर्म	मलकर्म
गुरुविपाक	कफवर्धक,वातपित्तहर	सृष्टविण्मूत्र
लघुविपाक	वातपित्तवर्धक,कफहर	बद्धविण्मूत्र

विपाक उपलब्धि हेतु -

“ विपाकः कर्मनिष्ठया ”

- विपाक का ज्ञान कर्म के आधार पर होता है। विपाक परोक्ष है, अतः कर्म के इसका अनुमान करते हैं।
- द्रव्य का अग्नि के द्वारा पचन होने पर शरीर पर जो कुछ भी कर्म होता है उससे अनुमान करके विपाक का ज्ञान होता है।

Ayurvedic Formulation Online Coaching Classes
+91 - 8319811628 , 8962265728

जैसे -

- शुक्रवर्धन, कफवर्धन, सृष्टविण्मूत्र इन कर्मों से मधुरविपाक का अनुमान होता है।
- अश्वगन्धा का सेवन करने पर अग्नि द्वारा पचन होने के बाद धातु- कर्म – वृष्य कर्म होता है, जिससे अनुमान करते हैं कि अश्वगन्धा का विपाक मधुर है।

गुणविज्ञानीय प्रकरण

- वैशेषिक दर्शन ने भाव पदार्थों में गुण को दूसरा स्थान दिया है।
- चरक संहिता के षड् पदार्थों में गुण का तृतीय स्थान है।
- गुण द्रव्य में आश्रित रहता है।
- गुण को द्रव्य का निष्क्रिय रूप कहा जा सकता है, कर्म को द्रव्य का सक्रिय रूप कहा जाता है।

गुण ' शब्द की व्युत्पत्ति :-

' गुण आमंत्रणे ' इस धातु से ' गुण ' शब्द की उत्पत्ति हुई है '

गुण ' शब्द की निरूक्ति :-

गुण्यते आमंत्र्यते लोके अनेन इति गुणः।

जिसके कारण लोक या लोकगत लोग द्रव्य की ओर आकर्षित होते हैं , उसे गुण कहा जाता है।

गुण के लक्षण :-

द्रव्याश्रय्यगुणवान् संयोग विभागयोर्नकारणमनपेक्ष इति गुण लक्षणम्। (वै. द)

- द्रव्याश्रय - गुण का स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है। वह सदा द्रव्य में आश्रित रहता है।
- अगुणवान - गुण का अपना कोई गुण नहीं होता। गुण स्वयं गुणरहित होता है।
- संयोगविभागयोर्नकारणम् - गुण संयोग और विभाग में अनपेक्ष कारण नहीं होता , परन्तु कर्म संयोग और विभाग में अनपेक्ष कारण होता है।

समवायी तु निश्चेष्टः कारणं गुणः। (च.सु. 1/57)

जो समवयी (किसी आश्रय का आश्रयी या किसी आधार का आधेय) हो , निश्चेष्ट (चेष्टारहित) और जो स्वगुण की उत्पत्ति मे कारण हो , उसे गुण कहते हैं।

अथ द्रव्याश्रिता ज्ञेया निर्गुणा निष्क्रिया गुणाः। (कारिकावली)

जो द्रव्य में आश्रित होता है , गुणरहित होता है और क्रियाहीन होता है , उसे गुण कहते हैं।

विश्वलक्षणा गुणाः। (रसवैशेषिक के अनुसार)

जिसका लक्षण विश्व की तरह हो , उसे गुण कहते हैं। अर्थात् जिसका लक्षण विश्व की तरह फैले हुए विकीर्ण या भिन्न - भिन्न लक्षण वाला हो , उसे गुण कहते हैं। द्रव्य द्रव्य गुणरहित है में आश्रित है।

गुणों की संख्या :-

चरक संहिता के अनुसार गुणों की संख्या -

सार्था गुर्वादयो बुद्धिः प्रयत्नान्ताः परादयः। गुणाः प्रोक्ता..... ।। (च.सू .1 / 49)

चरक संहिता ने कुल 41 गुण माने हैं –

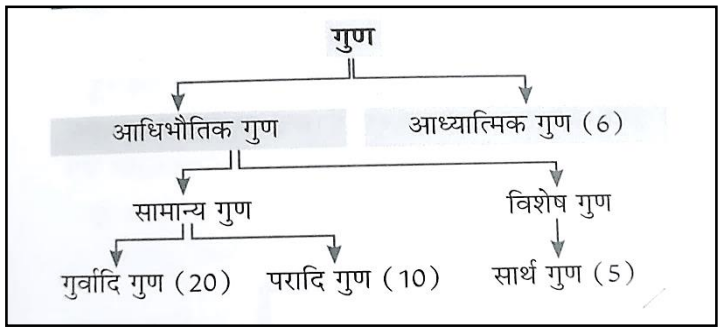

सार्था गुण – 5 (**शब्द** , स्पर्श , रूप , रस और गन्ध)

गुर्वादि गुण – 20 (गुरुमन्दहिम स्निग्धश्लक्ष्णसांद्र मृदुस्थिराः । गुणा : ससूक्ष्मविशदा विंशति सविपर्ययाः ।)

बुद्धि प्रयत्नान्ता (आध्यात्मिक गुण) – 6 (बुद्धि, सुख, दुख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न)

परादि गुण – 10 (परापरत्वे **युक्तिश्च** संख्या संयोग एव च । विभागश्च पृथकत्वं च परिमाणमथापि च ।

संस्कारोऽध्यास इत्येते गुणा ज्ञेयाः परादयः । सिद्ध्युपायाश्चिकित्साया लक्षणस्तान् प्रचक्ष्महे ॥)

न्याय और वैशेषिक दर्शन के अनुसार गुणों की संख्या -

रूपरसगन्धस्पर्शा : संख्या : परिमाणानि पृथकत्वं संयोग विभागौ परत्वापरत्वे बुद्धयः सुखदुःखेच्छाद्वेषौ प्रयत्नाश्च गुणाः ।

वैशेषिक दर्शन ने 17 गुणों का वर्णन किया है-

रूप , रस , गन्ध , स्पर्श , परत्व , अपरत्व ,संख्या , संयोग , विभाग , परिमाण , पृथकत्व , बुद्धि , सुख , दुःख , इच्छा , द्वेष और प्रयत्न ।

न्याय दर्शन में 24 गुणों का वर्णन किया हैं -

शब्द , रूप , रस , गन्ध, स्पर्श, परत्व, अपरत्व, संख्या, संयोग, विभाग , परिमाण , पृथकत्व, संस्कार, बुद्धि, सुख, दुःख, द्वेष, प्रयत्न, धर्म, अधर्म, गुरुत्व, द्रवत्व , स्नेह ।

सार्थ गुण - पर्याय - वैशेषिक गुण , विशेष गुण , इन्द्रिय गुण , स्वाभाविक गुण और अर्थ गुण ।

सार्थ गुणों के नाम –

अर्थाः शब्दादयो ज्ञेया गोचरा विषया गुणाः । च . शा . 1/31

महाभूतानि खं वायुरनिरापः क्षितिस्तथा । शब्द : स्पर्शश्च रूपं च रसो गन्धश्च तद्गुणाः ॥

शब्द , स्पर्श , रूप , रस और गन्ध को सार्थ गुण कहते हैं ।

(1) शब्द (sound)

श्रोत्रग्राह्यो गुणः शब्दः ।

- जिस गुण को श्रोत्रेन्द्रिय से जाना जाए उसे शब्द कहते हैं ।
- शब्द गुण केवल आकाश महाभूत में होता है ।
- शब्द के दो भेद है

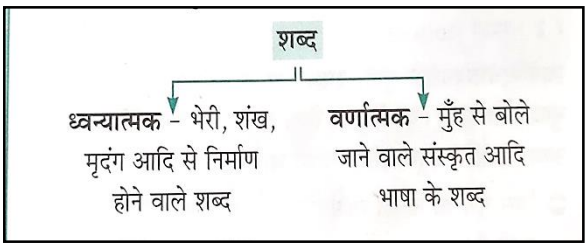

APPLIED ASPECT

- रोग एवं रोगी परीक्षा में शब्द गुण का महत्त्व है।।
- आटोप की परीक्षा भी शब्द गुण पर ही आधारित है।
- योगरत्नाकर में अष्टविध परीक्षा के अन्तर्गत भी शब्द परीक्षा का उल्लेख है।
- Stethoscope is used to check the sound of heart and lungs . Normal sound indicates normal functioning of both the organs .
- Percussion examination is done with the help of sound . It is a method of tapping on a surface to determine the underlying structure . Four types of sounds are used in percussion examination resonant , hyper- resonant , stony dull and dull .

(2) स्पर्श (touch)

त्वगेन्द्रियमात्रग्राह्यो गुण : स्पर्श

- जिस गुण को केवल स्पर्शनेन्द्रिय से जाना जाता है उसे स्पर्श कहते हैं।
- स्पर्श गुण पृथ्वी , जल , तेज और वायु महाभूतो में पाया जाता है।
- स्पर्श के तीन भेद है-
  1) शीत स्पर्श - जल महाभूत
  2) उष्ण स्पर्श - तेज महाभूत
  3) अनुष्णशीत स्पर्श - पृथ्वी और वायु महाभूतों

APPLIED ASPECT

- रोग एवं रोगी परीक्षा में स्पर्श गुण का भी महत्त्व है।
- ज्वर की परीक्षा स्पर्श से की जाती है।
- योगरत्नाकर में अवध परीक्षा के अन्तर्गत भी स्पर्श परीक्षा का उल्लेख है। नाड़ी परीक्षा भी स्पर्श पर ही आधारित है।
- Palpation examination is done with the help of touch . It is a method of feeling an object in or on the body to determine ifs shape , size and location .

(3) रूप (feature)

चक्षुर्मात्रग्राह्यो गुणो रूपम्।

- जिस गुण को केवल चक्षुरेन्द्रिय से जाना जाता है उसे रूप कहते हैं।
- रूप गुण पृथ्वी , जल और तेज महाभूतो में पाया जाता है।
- रूप के सात भेद है (1) शुक्ल , (2) नील (3) पीत , (4) रक्त , (5) हरित , (6) कपिश और (7) चित्र

APPLIED ASPECT

- रोग एवं रोगी परीक्षा में रूप गुण का भी महत्व है।
- कामला के लक्षणों में हारिद्रत्वक नखानतः ' अर्थात् त्वचा , नख और मुख का वर्ण हरिद्रा के समान हो जाता है और भिकवर्ण ' अर्थात् वर्षाकालिन मेंढक के शरीर के वर्ण के समान कहा गया है। इनकी परीक्षा रूप गुण की सहायता से ही की जाती है।

- योगरत्नाकर में अष्टविध परीक्षा के अन्तर्गत दुक और आकृति की परीक्षा रूप के आधार पर ही की जाती है।
- Inspection examination is done with the help of sight or by observing features ,

(4) रस

रसनाग्राह्यो गुणो रसः।

- जिस गुण को केवल रसनेन्द्रिय से जाना जाता है उसे रस कहते हैं।
- रस गुण पृथ्वी और जल महाभूतो में पाया जाता है।
- रस के छ : भेद होते हैं -

(1) मधुर , (2) अम्ल , (3) लवण , (4) कटु , (5) कषाय और (6) तिक्त

APPLIED ASPECT

- रोग एवं रोगी परीक्षा में रस गुण का भी महत्त्व है।
- प्रमेह के लक्षणों में षट्पदपिपीलिकाभिश्च शरीर मूत्राभिसरणं ' अर्थात् शरीर या मूत्र पर भौरों या चिंटियों का चलना कहा गया है। शरीर या मूत्र के रस के कारण ही चिंटियाँ आदि आकर्षित होती है। इस प्रकार प्रमेह व्याधि का निदान रस गुण के आधार पर किया जा सकता है।
- योगरत्नाकर में अष्टविध परीक्षा के अन्तर्गत जिव्हा परीक्षा में जिव्हा की साम - निरामता के साथ - साथ उसकी रसज्ञता का भी परीक्षण होता है।

(5) गन्ध

घ्राणग्राह्यो गुणो गन्धः।

- जिस गुण को घाणेन्द्रिय से जाना जाता है उसे पृथ्वी कहते हैं।
- गन्ध गुण केवल पृथ्वी महाभूत में पाया जाता है।
- गन्ध के दो भेद होते हैं (1) सुरभि (सुगन्ध) और (2) असुरभि (दुर्गन्ध)।

APPLIED ASPECT

- रोग एवं रोगी परीक्षा में गन्ध गुण का भी महत्त्व है।
- रक्तपित्त के लक्षणों में ' लोहलोहितमत्स्यामगन्धित्वमिव चास्यस्य ' अर्थात् मुख से लोह , रक्त , मछली और आम रस की गन्ध के समान गन्ध निकलती है , ऐसा लक्षण कहा गया है।
- आचार्य सुश्रुत ने व्रण गन्ध का उल्लेख किया है।

गुर्वादि गुण

पर्याय - शारीरिक गुण , सामान्य गुण , द्वन्द्वगुण , विंशति गुण , चिकित्स्य गुण

द्रव्यों में रहने वाले 20 गर्बादि गण मनुष्य के शरीर में भी रहते है। इसी कारण शरीरस्य दोष , धातु एवं मलों की क्षय , वृद्धि और स्थिति भी इन्हीं द्रव्यों के सेवन से होती है।

गुरुमन्दहिम स्निग्धश्लक्ष्णसांद्र मृदुस्थिराः। गुणा : ससूक्ष्मविशदा विंशति सविपर्ययाः।

गुवदि गुणों के दस द्वन्द्व -

1) गुरू x लघु
2) मन्द x तीक्ष्ण
3) शीत x उष्ण
4) स्निग्ध× रुक्ष
5) श्लक्ष्ण × खर
6) सान्द्र x द्रव
7) मृदु × कठिन
8) स्थिर x चल
9) सूक्ष्म x स्थूल
10) विशद x पिच्छिल

गुरू - Heaviness	**लघु - Lightness**
मन्द - Dullness	**तीक्ष्ण - Sharpness**
शीत - Coldness	**उष्ण - Hotness**
स्निग्ध - Oleaginous	**रुक्ष - Dryness**
श्लक्ष्ण - Smoothness	**खर - Roughness**
सान्द्र - Solidity	**द्रव - Liquidity**
मृदु - Softness	**कठिन - Hardness**
स्थिर - Immobility	**चल - Mobility**
सूक्ष्म - Minuteness	**स्थूल - Bulkiness**
विशद - Clarity	**पिच्छिल - Sliminess**

गुण	कर्म	हेमाद्रि द्वारा मुख्य कर्म	दोष प्रभाव	उदाहरण
गुरु	बृंहण	यस्य द्रव्यस्यः बृहणे कर्मणि शक्तिः स गुरु।	कफकर , वातहर	माष , मुशली
लघु	लंघन	लंघने लघुः।	वातकर , कफघ्न	मुद्ग, मूल , लाजा
मन्द	शमन	यस्य शमने शक्तिः स मन्दः।	कफकर , पित्तहर	अमृता (गुडूची) , कुटज
तीक्ष्ण	शोधन	यस्य शोधने शक्तिः स तीक्ष्णः।	कफहर , पित्तकर	जयपाल , शुण्ठी
शीत	स्तम्भन	स्तम्भने हिम।	वातकर , पित्तहर	चन्दन , खस, नारियल
उष्ण	स्वेदन	स्वेदने उष्णः।	वातहर , कफहर	चित्रक , मरिच
स्निग्ध	क्लेदन	यस्य क्लेदने शक्तिः स स्निग्धः।	वातहर , कफकर	घृत , तैल , वसा
रूक्ष	शोषण	यस्य शोषणे शक्तिः स रूक्षः।	वातकर , कफहर	यव , रसाजन
श्लक्ष्ण	रोपण	यस्य रोपणे शक्तिः स श्लक्ष्णः।	कफकर	मुक्ता , प्रवाल
खर	लेखन	यस्य लेखने शक्तिः स खरः।	वातकर	कमलदण्ड
सान्द्र	प्रसादन	यस्य प्रसादने शक्तिः स सान्द्रः।	कफकर	मक्खन , मलाई
द्रव्य	विलोडन	यस्य विलोडने शक्तिः स द्रव्यः।	कफकर	जल , दूध , मूत्र
मृदु	श्लथन	यस्य श्लथने शक्तिः स मृदुः।	कफकर	घृत , तैल , वसा
कठिन	दृढ़ीकरण	यस्य दृढ़ीकरणे शक्तिः स कठिनः।	वातकर	मुक्ता , प्रवाल
स्थिर	धारण	यस्य धारणे शक्तिः स स्थिरः।	कफकर	पृथुक , अश्वगंधा
सर	प्रेरण	यस्य प्रेरणे शक्तिः स सरः।	वातकर	स्वर्णपत्री , आरग्वध
सूक्ष्म	विवरण	यस्य विवरणे शक्तिः स सूक्ष्मः।	वातकर	मद्य , कस्तूरी
स्थूल	संवरण	यस्य संवरणे शक्तिः स स्थूलः।	कफकर	पिष्टक , श्रीखण्ड
विशद	क्षालन	यस्य क्षालने शक्तिः स विशदः।	वातकर	निम्ब , क्षार , मद्य
पिच्छिल	लेपन	यस्य लेपने शक्तिः स पिच्छिलः।	कफकर	इसबगोल , इक्षुरस

गुर्बादि गुणों का विस्तार से वर्णन

(1) गुरू (one which is responsible for heaviness in the body and takes time for digestion)

गुणकर्म

सादोपलेपबलकृद् गुरूस्तर्पणबृंहणः।

सादकृद् - अवसाद (faintness) उत्पन्न होता है।

उपलेपकृद् - शरीर को उपलेपित (coat) करता है।

बलकृद् - शरीर को बल (strength) प्रदान करता है।

तर्पण - शरीर को तर्पित (oblation) करता है।

बृहण - शरीर का पोषण (nutrition) करता है।

APPLIED ASPECT

- अपतर्पणजन्य व्याधियों में गुरू गुणयुक्त द्रव्यों से चिकित्सा की जाती है।
- शरीर का बल बढ़ाने हेतु इसका प्रयोग किया जाता है।
- अत्याग्नि की अवस्था में गुरू द्रव्य उपयुक्त है।

(2) लघु (one which is responsible for lightness in the body and is easy to digest)

गुणकर्म

लघुस्तद्विपरीतः स्याल्लेखनो रोपणस्तथा।

लेखन - शरीर को कृश करने वाला (scraping)

रोपण- व्रण का रोपण करने वाला (healing)

APPLIED ASPECT

- सन्तर्पणजन्य व्याधियों में लघु गुणयुक्त द्रव्यों से चिकित्सा की जाती है।
- बढ़े हुए धातुओं को कम करने के लिए लघु गुणयुक्त द्रव्यों का प्रयोग किया जाता है।
- मन्दाग्नि की अवस्थामें लघु द्रव्य उपयुक्त है।

(3) शीत (Coldness)

गुणकर्म

ह्लादनः स्तम्भनः शीतो मूर्च्छातृट्स्वेददाहजित्।

ह्लादन - मन को आल्हादित या प्रसन्न करने वाला।

स्तम्भन - शरीर के भावों को स्तम्भित (रोकना) करने वाला।

शीत- शरीर में शीतलता लाने वाला।

मूर्च्छातृट्स्वेददाहजित् - मूर्च्छा को , तृष्णा को ,स्वेद को , दाह को जितने वाला।

APPLIED ASPECT

- उष्णताजन्य व्याधियों में शीत गुणयुक्त द्रव्यों से चिकित्सा की जाती है।
- उष्ण गुण से बढ़ें हुए पैत्तिक व्याधियों में शीत गुणात्मक द्रव्यों से चिकित्सा की जाती है।
- उदाहरण उष्ण गुण से बढ़े हुए पैत्तिक अम्लपित्त में शीत गुणात्मक प्रवालपंचामृत से चिकित्सा की जाती है।
- मूर्च्छा , दाह आदि में शीत गुणात्मक द्रव्यों से चिकित्सा की जाती है।

(4) उष्ण (Hotness)

गुणकर्म

शीतशूलव्युपरमे स्तम्भगौरवनिग्रहे ।

संजाते मार्दवे स्वेदे स्वेदनाद्विरतिर्मता ।

शीतव्युपरम् - शीत को कम करने वाला ।

शूलव्युपरम् - शूल को कम करने वाला ।

स्तम्भनिग्रहण - स्तम्भ को दूर करने वाला ।

गौरवनिग्रहण - गौरवता को दूर करने वाला ।

APPLIED ASPECT

- शीतजन्य व्याधियों में उष्ण गुणयुक्त द्रव्यों से चिकित्सा की जाती है ।
- शीत गुण से बढ़े हुए वातिक एवं श्लैष्मिक व्याधियों में उष्ण गुणात्मक द्रव्यों से चिकित्सा की जाती है ।
- उदाहरण शीत गुण से स्तम्भित वात में उष्ण स्वेदन किया जाता है ।
- ज्वर में स्वेद उत्पत्ति के लिए उष्ण गुणात्मक स्वेदन द्रव्यों का प्रयोग किया जाता है ।

(5) स्निग्ध (Oleaginous)

गुणकर्म

स्नेह मार्दवकृत् स्निग्धो बलवर्णकरस्तथा ।

मार्दवकृत् - स्निग्ध गुण के द्रव्य शरीर में मृदुता लाते हैं ।

बलकर - स्निग्ध गुण बल को बढ़ाता है ।

वर्णकर - वर्ण को ठीक करता है ।

APPLIED ASPECT

- रूक्षताजन्य व्याधियों में स्निग्ध गुणयुक्त द्रव्यों से चिकित्सा की जाती है ।
- रूक्ष गुण से बढ़ें हुए वातिक व्याधियों में स्निग्ध गुणात्मक द्रव्यों से चिकित्सा की जाती है ।

(6) रूक्ष (Dryness)

गुणकर्म

रूक्षस्तद्विपरीतः स्याद्विशेषात् स्तम्भनः खरः।

स्तम्भन - शरीर के भावों को स्तम्भित (रोकना) करने वाला

खर - शरीर के भावों में खरता उत्पन्न

APPLIED ASPECT

- स्निग्धताजन्य व्याधियों में रूक्ष गुणयुक्त द्रव्यों से चिकित्सा की जाती है ।
- स्निग्ध गुण से बढ़े हुए श्लैष्मिक व्याधियों में रूक्ष गुणात्मक द्रव्यों से चिकित्सा की जाती है ।

(7) मन्द (one which is responsible for mitigation)

गुणकर्म

मन्दो यात्राकर स्मृतः ।

यात्राकर - मन्द गुण के कारण शरीर के भाव पदार्थों की गति में कमी आती है।

मन्द गुण कफदोष की वृद्धि करता है और पित्त का शमन करता है।

मन्द गुण अग्निमांद्य करता है।

APPLIED ASPECT

- मन्द गुण धातु की वृद्धि करता है।
- पाक एवं स्रावहर हैं।
- अतिसार की अवस्था में मन्द गुणात्मक द्रव्यों का प्रयोग किया जा सकता है।

(8) तीक्ष्ण (one which is responsible for cleaning)

गुणकर्म

दाहपाककरस्तीक्ष्णः स्त्रावणः ।

दाहकर - तीक्ष्ण गुण के कारण शरीर के दाह उत्पन्न होता है।

पाककर- तीक्ष्ण गुण से पाक की उत्पत्ति होती है।

स्त्रावणः - स्त्रावोत्पत्ति में कारक है। (discharge) है।

APPLIED ASPECT

- तीक्ष्ण गुण बढ़े हुए कफवात और धातुओं के क्षय में कारक है।
- पाण्डु रोग में तीक्ष्ण गुणात्मक द्रव्यों से वमन एवं विरेचन का प्रयोग किया जाता है।

(9) स्थिर (one which is responsible for retention or immobility)

गुणकर्म

स्थिर : निश्चल : चलप्रतिबन्धकः ।

चलप्रतिबन्धक - स्थिर गुण चल गुण को रोकने वाला होता है।

APPLIED ASPECT

- स्थिर गुणात्मक द्रव्य वात और मल का स्तम्भन करने में सहायक है।
- शुक्रस्तम्भक के रूप में स्थिर गुणात्मक द्रव्यों का उपयोग किया जाता है।

(10) सर (one which is responsible for stimulus mobility)

गुणकर्म

सरोहानुलोमनः प्रोक्तः ।

अनुलोमन - सर गुण चात और मल को प्रवृत्त करता है ।

APPLIED ASPECT

- सर गुणात्मक द्रव्य वातानुलोमक होने से मलावष्टम्भ एवं उदावत में उपयुक्त है ।

(11) मृदु (one which is responsible for laxity)

गुणकर्म

अदाहपाककरो ऽस्त्रावण इत्यर्थ ।

अदाहकर - मृदु गुण दाह का नाश करता है ।

अपाककर - पाक का नाश करता है ।

अस्त्रावण - स्त्राव को नष्ट करता है ।

APPLIED ASPECT

- मृदु गुण में श्लथन का कार्य होने से वह मांस धातु को कठिनता को नष्ट करने में प्रयुक्त होता है ।
- अदाहपाककर होने से व्रणों का रोपण करने में प्रयुक्त होता है ।

(12) कठिन (one which is responsible for hardening)

गुणकर्म

दृढ़ीकरण कठिण गुण शरीर को दृढ़ करता है ।

कठिण गुणात्मक द्रव्य शरीर का बलवर्धन करते हैं ।

कठिण गुण से मलों में शुष्कता उत्पन्न होती है ।

APPLIED ASPECT

- शरीर की शिथिलता को दूर करने के लिए रूक्ष एवं कठिण द्रव्यों का प्रयोग किया जा सकता है ।
- मांसवृद्धि की अवस्था में कठिन द्रव्यों का प्रयोग किया जा सकता है

(13) विशद (one which is responsible for clarity)

गुणकर्म

विशदो विपरीतोऽस्मात् क्लेदाचूषण रोपणः ।

क्लेदाचूषण- विशद गुण शरीर के क्लेद का आचूषण कर शरीर को निर्मल बनाता है ।

रोपण - विशद गुण व्रण के रोपण में सहायक है ।

APPLIED ASPECT

- धातुगत स्नेह या द्रव को क्लेद कहा गया है । प्रमेह आदि व्याधियाँ क्लेदजन्य होती है । इस क्लेद को नष्ट करने के लिए विशद गुण के द्रव्यों का प्रयोग किया जा सकता है ।

(14) पिच्छिल (Sliminess)

गुणकर्म

पिच्छिलो जीवनो बल्य: सन्धान: श्लेष्मलो गुरू: ।

जीवन - पिच्छिल गुण आयुष्य को नियत रूप से उसकी मर्यादा में बांधे रखता है ।

बल्य - पिच्छिल गुण बल को बढ़ाता है ।

सन्धान - अस्थिभग्न को जोड़ता है ।

श्लेष्मलो - कफ को बढ़ाता है ।

गुरू- गौरवता उत्पन्न करता है ।

APPLIED ASPECT

- सन्धान होने से पिच्छिल द्रव्यों में किया जा सकता है।
- कार्य की अवस्था में धातुवर्धनार्थ पिच्छिल द्रव्यों का प्रयोग किया जा सकता है ।

(15) श्लक्ष्ण (Smoothness)

गुणकर्म

श्लक्ष्ण: पिच्छिलवज्ज्ञेय: ।

श्लक्ष्ण गुण को पिच्छिल गुण के समान ही जानना चाहिए ।

APPLIED ASPECT

- व्रण रोपणार्थ श्लक्ष्ण द्रव्यों का प्रयोग होता है ।
- अस्थिसन्धानार्थ श्लक्ष्ण गुणात्मक द्रव्यों का भी प्रयोग होता है ।

(16) खर (Roughness)

गुणकर्म

- खर गुण शरीर का लेखन करता है ।
- धातुओं का क्षय करता है ।
- मलमूत्र का शोषण करता है ।
- शरीर में कर्कशता उत्पन्न करता है ।

APPLIED ASPECT

- विकृत धातुवृद्धि में जहाँ लेखन का कार्य अपेक्षित है , वहाँ खर गुणात्मक द्रव्यों का प्रयोग किया जाता है ।

(17) सूक्ष्म (Subtle)

गुणकर्म

- सूक्ष्म गुणयुक्त द्रव्य अपनी सूक्ष्मता से शरीर के सूक्ष्म स्रोतों में प्रवेश कर सकते हैं ।
- सूक्ष्म गुण आशकार्य करने वाला होता है ।
- सूक्ष्म गुणात्मक द्रव्य लघुपाकी होता है ।

APPLIED ASPECT

- विकृत सूक्ष्म गुणात्मक द्रव्य सूक्ष्म स्रोतोगामी होने से आशु गति से कार्य करते है ।

(18) स्थूल (Bulkiness)

गुणकर्म

- स्थूल गुण शरीर में स्थौल्य की उत्पत्ति करता है।
- स्थूल गुण स्रोतावरोध का कार्य करता है।
- स्थूल गुण स्रोतसों का संकुचन करता है।

APPLIED ASPECT

- कृश व्यक्ति को स्थूल बनाने के लिए स्थूल द्रव्यों का प्रयोग किया जा सकता है।
- अत्यग्नि की अवस्था में स्थूल गुणात्मक द्रव्यों का प्रयोग किया जा सकता है।

(19) सान्द्र (Solidity)

गुणकर्म

सान्द्रः स्थूलः स्याद् बन्धकारकः।

स्थूल- सान्द्र गुण शरीर को स्थूल बनाता है।

बन्धकारक - सान्द्र गुण शरीर के अवयवों का बन्धन करता है।

APPLIED ASPECT

- कृश व्यक्ति का उपचय करने के लिए सान्द्र द्रव्यों का प्रयोग किया जा सकता है।
- अपतर्पणजन्य विकारों में सन्तर्पणार्थ सान्द्र द्रव्यों का प्रयोग किया जा सकता

(20) द्रव (Fluidity)

गुणकर्म

द्रवः प्रक्लेदनः।

प्रक्लेदन द्रव गुण क्लेद उत्पत्ति (आर्द्रता) का कार्य करता है।

आध्यात्मिक गुण

पर्याय - आत्म गुण , बुद्धि आदि गुण , प्रयत्नान्ता गुण ।

आध्यात्मिक गुण 6 होते हैं - **बुद्धि , सुख , दुःख , इच्छा , द्वेष और प्रयत्न**

इच्छा द्वेषः सुखं दुःखं प्रयत्नश्चेतना धृतिः । बुद्धि स्मृत्यहंकारो लिंगानि परमात्मनः ।

इच्छा , द्वेष , सुख , दुःख , प्रयत्न , चेतना , धृति , बुद्धि , स्मृति और अहंकार ये आत्मा के गुण है । आचार्य शिवदास सेन ने चेतना, धृति , स्मृति और अहंकार को बुद्धि में ही समाविष्ट किया है । अतः आत्मगुण 6 ही होते हैं ।

आध्यात्मिक गुणों का विस्तार से वर्णन -

1. बुद्धि - **' सर्वव्यवहारहेतुर्गुणो बुद्धिर्ज्ञानम् ।**

सर्वव्यवहार का कारण या हेतु जो गुण होता है उसे बुद्धि कहते हैं ।

बुद्धि के दो प्रकार होते हैं – स्मृति , अनुभव

" संस्कारमात्रजन्यं ज्ञानं स्मृतिः । तद्भिन्नं ज्ञानमनुभवः । स द्विविधः - तर्कसंग्रह यथार्थोऽयथार्थश्च । '

संस्कार से उत्पन्न ज्ञान को स्मृति कहते हैं और स्मृति से भिन्न ज्ञान अनुभव है । अनुभव दो प्रकार का होता है - यथार्थ और अयथार्थ ।

- जो वस्तु जिस प्रकार की है , उसे ठीक उसी प्रकार का समझना यथार्थ अनुभव (प्रमा) है ।
- जैसे- चाँदी को देखकर उसे चाँदी समझना या चाँदी का ज्ञान होना यथार्थ अनुभव (प्रमा) है ।
- वस्तु को उसी प्रकार न समझना जैसी की वह हो , बल्कि उससे भिन्न समझना अयथार्थ अनुभव (अप्रमा) हैं ।
- जैसे- शुक्ति को देखकर उसे शुक्ति न समझ कर चाँदी समझना अयथार्थ अनुभव (अप्रमा) है ।
- अयथार्थ अनुभव संशय , विपर्यय एवं तर्क - भेद से तीन प्रकार का होता है ।
- यथार्थ अनुभव प्रत्यक्ष अनुमिति , उपमिति तथा शब्दज भेद से चार प्रकार का होता है ।

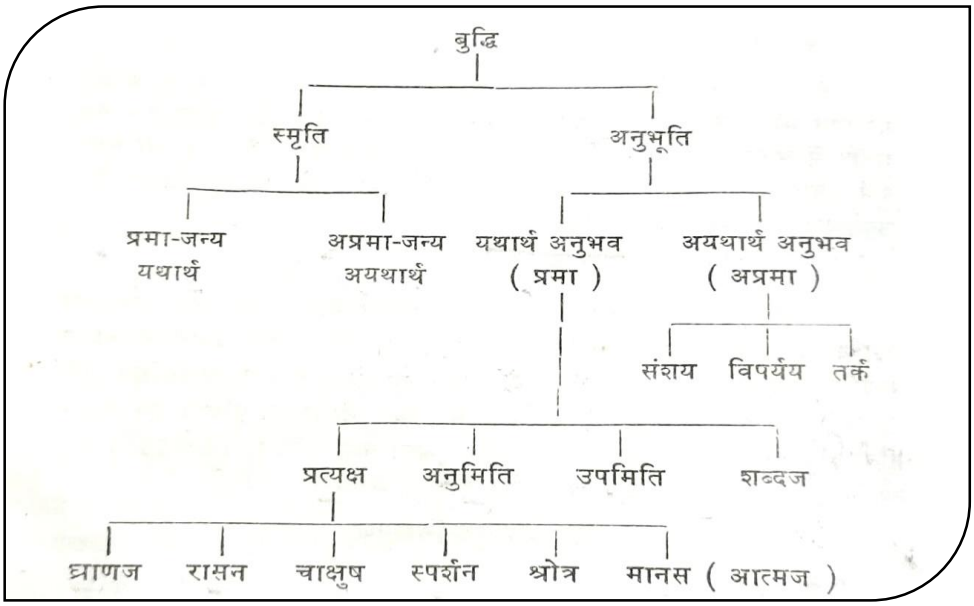

स्मृति के कारण –

वक्ष्यन्ते कारणान्यष्टौ स्मृतिर्यैरूपजायते । निमित्त रूपग्रहणात् सादृश्यात् सविपर्ययात् ।।
सत्त्वानुबन्धादभ्यासाज्ज्ञानयोगात् पुनः श्रुतात् । दृष्टश्रुतानुभूतानां स्मरणात् स्मृतिरूच्यते ॥

स्मृति के आठ कारण बताएँ गए हैं- निमित्त से , रूप ग्रहण से , सादृश्य से , विपर्यय से , सत्त्वानुबन्ध से , अभ्यास से , ज्ञानयोग से , पुन श्रुति श्रुत ।

1. निमित्तग्रहणात् - कारण को देखकर कार्य का स्मरण करना ।

उदा०- बारिश में भिगते हुए व्यक्ति को देखकर होने वाले ज्वरादि व्याधियों का स्मरण करना ।

2. रूपग्रहणात् - आकृति का ग्रहण करके स्मरण करना ।

उदा ० सन्धि की विषमाकृति देखकर सन्धिव्यक्ति का स्मरण करना ।

3. सादृश्यात् - समानता को देखकर स्मरण करना ।

उदा ० श्रृंगाल शीर्षवत् (Fox Head) सन्धि को देखकर क्रोष्टुकशीर्ष व्याधि का स्मरण करना ।

4. विपर्ययात् - असमानता को देखकर स्मरण करना ।

उदा ० व्याधिग्रस्त व्यक्ति को देखकर स्वस्थ व्यक्ति का स्मरण करना ।

5. सत्त्वानुबन्धात् - मन को ध्यानपूर्वक लगाकर स्मरण करना ।

उदा ० - यदि किसी छात्र को पूछा जाता है कि , अमुक रोगी के क्या लक्षण है ? तो वह मन को ध्यानपूर्वक लगाकर उस रोगी के लक्षण बताता हैं ।

6. अभ्यासात् - किसी विषय का अभ्यास कर उसका स्मरण किया जा सकता है ।

उदा०- किसी शस्त्रक्रिया का बार - बार अभ्यास कर उसके प्रत्येक चरण का क्रम से स्मरण किया जा सकता है ।

7. ज्ञानयोगात् - तत्त्वज्ञान से या ज्ञानयोग से किसी भी विषय का स्मरण किया जा सकता है ।

8. पुनः श्रुतात् - पूर्व में गये विषय का पुन : अल्पभाग भी सुनकर सम्पूर्ण विषय का स्मरण हो जाता है ।

2. इच्छा - ' स्वार्थं परार्थं वाऽप्राप्तप्रार्थनेच्छा । '

यह एक आध्यात्मिक गुण है । अर्थात् अपने लिए अथवा दूसरे के लिए अप्राप्त विषय की चाहना का नाम ' इच्छा ' है । काम , अभिलाषा , राग , संकल्प , कारुण्य , वैराग्य , उपधा और भाव आदि इच्छा के भेद हैं ।

3. द्वेष - ' प्रज्वलनात्मको द्वेषः । '

अर्थात् शरीर एवं मन का दाह होने के समान महसूस होना ' द्वेष ' है । क्रोध , द्रोह् , मन्यु , अक्षमा और अमर्ष - ये द्वेष के भेद हैं ।

4. प्रयत्न –

- पदार्थ की प्राप्ति के लिए कर्म करने की चेष्टा करना प्रयत्न है ।
- प्रयत्न , संरम्भ , उत्साह - ये पर्यायवाची शब्द हैं ।

प्रयत्न के दो प्रकार होते हैं—

१. जीवनपूर्वक प्रयत्न - स्वाभाविक शारीर क्रिया जैसे श्वसन , रक्तसंवहन , अन्न पचन आदि के लिए मिलने वाली प्रेरणा को जीवनपूर्वक प्रयत्न कहते हैं।

२. द्वेषपूर्वक प्रयत्न- सुखप्राप्ति के लिए तथा दुःख को दूर करने के लिए राग - द्वेषपूर्वक उत्पन्न होने वाली प्रेरणा को इच्छा - द्वेषपूर्वक प्रयत्न कहते हैं।

5. सुख - **' अनुग्रहलक्षणं सुखम् '।**

' धर्मजन्यमनुकूलवेदनीयं गुणः सुखम् '।

धर्म से उत्पन्न होने वाला ' यह मुझे हो ' इस प्रकार अनुकूल ज्ञान विषय का जो गुण है , उसे ' सुख ' कहते हैं। धर्म का फल पुण्य तथा पुण्य का फल सुख होता है।

6. दुःख - **' उपघातलक्षणं दुःखम् '।**

' अधर्मजन्यं प्रतिकूलवेदनीयं गुणो दुःखम् '।

अधर्म से उत्पन्न होने वाला और ' यह मुझे न हो ' इस प्रकार का प्रतिकूल ज्ञान - विषयक जो गुण है , उसको दुःख कहते हैं। अधर्म का फल पाप एवं पाप का फल दुःख होता है।

परादि गुण

पर्याय - सामान्य गुण , प्रकृति गुण , साधारण गुण , चिकित्सा सिद्धि के उपाय।

परादि गुणों के नाम-

परापरत्वे युक्तिश्च संख्या संयोग एव च। विभागश्च पृथकत्वं च परिमाणमथापि च।

संस्कारोऽध्यास इत्येते गुणा ज्ञेयाः परादयः। सिद्ध्युपायाश्चिकित्साया लक्षणस्तान् प्रचक्ष्महे॥

चरक संहिता ने 10 परादि गुण माने हैं

1) पर (Superior / Primary)
2) अपर (Inferior / Secondary)
3) युक्ति (Logical reasoning)
4) संख्या (Number)
5) संयोग (Conjunction)
6) विभाग (Disjunction)
7) पृथक्त्व (Differentiation)
8) परिमाण (Amount)
9) संस्कार (Process)
10) अभ्यास (Practice)

परादि गुणों का विस्तार से वर्णन -

1 &2) पर और अपर (Superior / Primary and Inferior / Secondary) -

- **परत्वं प्रधानत्वम्।** पर का अर्थ है प्रधान या श्रेष्ठ
- **अपरत्वम् अप्रधानत्वम्।** अपर का अर्थ है अप्रधान या कनिष्ठ
- देश , काल , आयु , मान , विपाक, रस , वीर्यादि में जो श्रेष्ठ या प्राधन हो।

चिकित्सीय महत्व

- उदाहरण- जांगल देश पर है और आनूप देश अपर , विसर्ग काल पर है और आदान काल अपर , तरूण वय पर और वृद्धावस्था अपर आदि।
- चिकित्सा करते समय औषधी चयन में परापर का विचार किया जाता है। इसी परिपेक्ष्य में चरकसंहिता ने हिततम - अहिततम का विचार प्रस्तुत किया है

3) युक्ति (Logical reasoning)

युक्तिश्च योजना या तु युज्यते।

योजना दोषादि का विचार कर जो औषधी की सम्यक् कल्पना की जाती है , उसे योजना कहते हैं।

चिकित्सीय महत्व

- व्याधि के विविध पहलुओं (हेतु , लक्षण , आदि) को देखकर ही सम्प्राप्ति की युक्ति लगाई जाती है।
- चिकित्सा में किस द्रव्य का उपयोग करना चाहिए , इसकी युक्ति देश , काल , बल , अग्नि , प्रकृति आदि को देखकर ही की जाती है।
- स्वास्थ्य की रक्षा करने के लिए पथ्यापथ्य की युक्ति की जाती है।

4) संख्या (Number)

संख्या स्याद् गणितम्।

गणित को संख्या कहते हैं। एक , दो , तीन आदि व्यवहार के हेतु को संख्या कहते हैं

चिकित्सीय महत्व

- व्याधि के विविध प्रकार के सम्प्राप्ति भेदों में संख्या सम्प्राप्ति का भी अपना महत्व है।
- उदाहरण -
  - कास के 5 भेद हैं ,
  - श्वास के 5 भेद हैं ,
  - प्रमेह के 20 भेद है आदि।
- औषधी के मान का ज्ञान भी संख्या के आधार पर होता है।

5) संयोग (Conjunction)

योगः सह संयोग उच्यते।

द्रव्यों का आपस में मिलना संयोग कहलाता है। यह संयोग तीन प्रकार का होता है -

1) द्वन्द्वकर्मज - जब दो भेड़ आपस में लड़ते हैं , तब उनके संयोग को द्वन्द्वकर्मज संयोग कहते हैं।
2) सर्वकर्मज – मेले मे बहुत से लोगों का धक्कम धक्का सर्वकर्मज संयोग है।
3) एककर्मज - स्थिर वृक्ष पर कौए का आकर बैठना।

6) विभाग (Disjunction)

विभागस्तु विभक्तिः स्याद् वियोगों भागशोग्रह।

वस्तु को अलग - अलग करना विभाग कहलाता है। वस्तु को एक - एक करके विभक्त करना विभाग कहलाता है। विभाग के भी तीन प्रकार होते हैं -

1) द्वन्द्वकर्मज - दो भेड़ों का आपस में अलग होना द्वन्द्वकर्मज विभाग हैं।
2) सर्वकर्मज - मेले मे बहुत से लोगों का अलग होना।
3) एककर्मज - स्थिर वृक्ष से कौए का उड़ जाना।

7) पृथक्त्व (Differentiation)

पृथक्त्वं स्यादसंयोगो वैलक्षण्यमनेकता।

एक द्रव्य को दूसरे द्रव्य से भिन्न करने वाला जो गुण है वह पृथकृत्व कहलाता है।

1) असंयोग - जिन दो वस्तुओं का कभी संयोग हो ही न सके , उसे असयोग पृथक्त्व कहते हैं। उदाहरण - मेरू पर्वत और हिमालय पर्वत का पृथकत्व।
2) वैलक्ष्य - विजातीय द्रव्य जिनमें लक्षणों की असमानता होती है , उनके पृथक्त्व को वैलक्षण्य पृथक्त्व कहते हैं। उदाहरण - महिष , वराह आदि का पृथक्त्व।
3) अनेकता - समान जाति वाले द्रव्यों में भी विविध रूप होते हैं , उनके पृथक्त्व को अनेकतारूप पृथक्त्व कहते हैं। उदाहरण - एक गाय को वर्ण के आधार पर अन्य गायों से पृथक किया जा सकता है।

8) परिमाण (Amount / Measurement)

परिमाणं पुनर्मानं

जिससे किसी वस्तु की मात्रा जानी जाती है उसे परिमाण / मान कहते हैं। परिमाण के प्रकार : -

1) अणु (Minute)
2) दीर्घ (Long)
3) महत् (Gross)
4) ह्रस्व (Short)

मान के और तीन भेद किये गए है

1) पौतवमान (measurement by weight)
2) दुवयमान (measurement by finger) ,

3) पाय्यमान (measurement by volume)

9) संस्कार (Process)

संस्कारो हि गुणान्तराधानमुच्यते । ते गुणास्तोयाग्निसन्त्रिकर्षशौचमन्थनदेशकालवासनभाव नादिभिः कालप्रकर्षभाजनादिभिश्चाधीयन्ते ।

किसी क्रिया द्वारा गुणों में परिवर्तन लाना संस्कार कहलाता है। जल , अग्निसंयोग , शौच , मन्थन , देश , काल , वासना और भावना आदि या काल के बीत जाने से या विशिष्ट पात्र में रखने से गुणों में परिवर्तन लाया जाता है।

चिकित्सीय महत्व

- ❖ कषायकल्पना रूपी संस्कार से औषधि के गुणों में परिवर्तन लाया जा सकता है।
- ❖ द्रव्य की कार्यकारिता को बढ़ाने के लिए भावनारूपी संस्कार का प्रयोग किया जा सकता है।

10) अभ्यास (Practice)

भावाभ्ययसनम् अभ्यासः शीलनै सततक्रिया । '

किसी वस्तु या कार्य का निरन्तर प्रयोग करना अभ्यास कहलाता है शीलन और सतत क्रिया ये दोनों अभ्यास के पर्याय है।

शीलन और सतत क्रिया अभ्यास के पर्याय हैं।

चिकित्सीय महत्व

- ❖ पथ्यापथ्य निरार्धाण करने के लिए अभ्यास गुण का प्रयोग किया जा सकता है। व्याधि के अभ्यस्त हेतु का परिवर्जन कर पथ्य का निर्धारण किया जा सकता है।

गुणप्राधान्य - निरूपण

1) गुण रसों का पराभव करके अपने कार्य को प्रकट करते हैं। उदाहरण- जल मधुररस होने के कारण कफ को बढ़ाता है , लेकिन गरम करने पर उष्ण गुण के कारण गरम जल कफ को हरता है अर्थात् कफघ्न होता है। यहाँ पर जल का उष्ण गुण मधुररस को पराभूत कर या दबाकर कफघ्न कर्म करता है। जो किसी को दवा देता है वह प्रधान होता है। गुण रस को दबा देता है , अतः रस की अपेक्षा गुण प्रधान है।
2) विपाक रस का पराभव करता है तथा विपाक गुणों पर निर्भर होता है। जैसे- शीत , स्निग्ध , गुरु तथा पिच्छिल द्रव्यों का विपाक गुरु होता है तथा लघु , रूक्ष , तीक्ष्ण और विशद द्रव्यों का विपाक लघु होता है। इस पर से ही गुण रस की अपेक्षा प्रधान या श्रेष्ठ है- यह सिद्ध हो जाता है।
3) रसों की संख्या की अपेक्षा गुणों की संख्या अधिक होने के कारण गुण प्रधान है , कारण कि अल्पसंख्यक से बहुसंख्यक प्रधान माना जाता है।
4) गुणों का अनेक प्रकार से उपयोग किया जाता है , यथा - अभ्यङ्ग , प्रलेप , परिपेक , अवगाहन आदि के रूप में शीत , उष्ण , स्निग्ध प्रभृति गुणों का का उपयोग। जब कि रस का केवल मुख से ही उपयोग होता है। जिसका अनेक प्रकार से उपयोग हो वह श्रेष्ठ है , प्रधान है।
5) गुण रस के साथ रहकर अनेक कर्मों को करता है , अतः गुण प्रधान है।
6) गुण के विषय (आश्रय द्रव्य) अनेक होने के कारण गुण प्रधान है , कारण कि जिसके विषय अनेक होते हैं , वह प्रधान होता है।